Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2021-23
Licensed to Post without pre-payment
No. RJ/WR/WPP/18/2021

शिव आमंत्रण

आत्मा की नई उड़ान

सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण

आजादी का अमृत महोत्सव

20 जनवरी से दिसंबर 2022 तक चलेगा अभियान

वर्ष 09 | अंक 03 | हिन्दी (मासिक) | मार्च 2022 | पृष्ठ 16 | मूल्य ₹ 9.50

आगाज] प्रधानमंत्री ने किया आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर राष्ट्रीय अभियान का शुभारंभ

ब्रह्माकुमारीज़ के प्रयासों से देश को मिलेगी एक नई ऊर्जा और शक्ति

–प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

[राज्यपाल कलराज मिश्र, लोक सभा स्पीकर ओम बिरला, सीएम अशोक गहलोत, सीएम भूपेन्द्र पटेल, केंद्रीय मंत्री जी किशन रेड्डी शामिल हुए]

15
हजार कार्यक्रम देशभर में करने का लक्ष्य

10
करोड़ लोगों तक पहुंचने की योजना

07
अभियानों को पीएम ने दिखाई हरी झंडी

5000
सेवाकेंद्रों पर होंगे कार्यक्रम

» शिव आमंत्रण, आबू रोड (राजस्थान)। आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर राष्ट्रीय अभियान का प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 20 जनवरी को वर्चुअल शुभारंभ किया। सात अभियानों को भी हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

ऑनलाइन संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के प्रयासों से देश को एक नई ऊर्जा और शक्ति मिलेगी। त्याग और कर्त्तव्य भाव से करोड़ों देशवासी आज स्वर्णिम भारत की नींव रख रहे हैं। ब्रह्माकुमारीज़ का प्रभाव पूरे विश्व में है। मुझे उम्मीद है आने वाले समय में इस अभियान में एक नई ऊर्जा का संचार होगा।

उन्होंने कहा कि इस अभियान में स्वर्णिम भारत के लिए भावना भी है और साधना भी है। इसमें देश के लिए प्रेरणा भी है और ब्रह्माकुमारियों के प्रयास भी हैं। मैं देश के संकल्पों के साथ, देश के सपनों के साथ निरंतर जुड़े रहने के लिए ब्रह्माकुमारी परिवार का अभिनंदन करता हूं। जब संकल्प के साथ साधना जुड़ जाती है, जब मानवमात्र के साथ हमारा ममभाव जुड़ जाता है, अपनी व्यक्तिगत उपलब्धियों के लिए इदं न मम् का भाव जागने लगता है तो समझिए हमारे संकल्पों के जरिए एक नए कालखंड का जन्म होने वाला है। एक नया सवेरा होने वाला है। सेवा और त्याग का यही अनुभव आज अमृत महोत्सव में नए भारत के लिए उमड़ रहा है। इसी त्याग और कर्तव्य भाव से करोड़ों देशवासी स्वर्णिम भारत की नींव रख रहे हैं। हमारे और राष्ट्र के सपने अलग-अलग नहीं हैं। हमारी नीति और सफलता अलग-अलग नहीं है। राष्ट्र की प्रगति में ही हमारी प्रगति है। हमसे ही राष्ट्र का अस्तित्व है और राष्ट्र से ही हमारा अस्तित्व है। यह भाव, यह बोध नए भारत के निर्माण में हमारी ताकत बन रहा है। आज दादी जानकीजी और राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी सशरीर हमारे बीच उपस्थित नहीं हैं, लेकिन उनका आशीर्वाद महसूस हो रहा है। कुछ स्थल ऐसे होते हैं जिनमें एक अलग चेतना व ऊर्जा होती है। ये ये ऊर्जा उन महान व्यक्तित्वों की होती है जिनकी तपस्या से वन, पर्वत, पहाड़ भी जागृत हो उठते हैं। मानवीय प्रेरणाओं का केंद्र बन जाते हैं। माउंट आबू की आभा भी दादा लेखराज जैसे सिद्ध व्यक्तित्वों की वजह से निरंतर बढ़ती रही।

शेष पृष्ठ 2 पर ➤

“ओम शांति मंत्र से तनाव हो जाता है दूर

मैं बचपन से ही यहां आता रहा हूं। बचपन से ही दादियों के दर्शन करने और आशीर्वाद लेने का अवसर मिला। यहां दादियों ने मुझे मूलमंत्र दिया है कि जब भी आपको तनाव हो तो तीन बार ‘ओम शांति’ बोल दें तो सारा तनाव दूर हो जाता है। ओम शांति एक ऐसा मंत्र है जिसके उच्चारण से ही तनाव दूर हो जाता है। आज माउंट आबू अपनी पहचान देश-दुनिया में रखता है, उसके पीछे ब्रह्माकुमारीज़ आश्रम का विशेष योगदान है। हमारा मुल्क वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना वाला है। भारत की महान परंपरा रही है। ब्रह्माकुमारीज़ ने देशभर में पांच हजार केंद्रों पर हजारों प्रोग्राम करने का जो लक्ष्य रखा है वह अपने आप में बड़ी बात है। सरकार आजादी का अमृत महोत्सव मना रही है यह अच्छा कदम है। सत्य, अहिंसा के मार्ग पर चलकर ही हम समाज को आगे बढ़ा सकते हैं। जहां शांति होगी वहां विकास होगा। शांति, अहिंसा, भाईचारा यह हमारे मूलमंत्र हैं। इन्हें आगे बढ़ाने का कार्य ब्रह्माकुमारीज़ संस्था कर रही है। संस्था आने वाली पीढ़ी को अच्छे संस्कार देने का कार्य कर रही है।”

अशोक गहलोत
मुख्यमंत्री, राजस्थान

‘विश्वभर में पहुंचाने होंगे भारत की अच्छाई’

प्रधानमंत्री ने ब्रह्माकुमारीज़ के सोलर पॉवर से बनने वाले भोजन को सराहा

ब्रह्माकुमारीज़ का आध्यात्म के साथ शिक्षा, कृषि, स्वास्थ्य में योगदान: पीएम

प्रधानमंत्री मोदी ने कह कि अमृत और अमरत्व का रास्ता बिना ज्ञान के प्रकाशित नहीं होता है। इसलिए अमृत काल का यह समय हमारे ज्ञान, योग और इनोवेशन का समय है। हमें एक ऐसा भारत बनाना है, जिसकी जड़ें प्राचीन परंपराओं और विरासत से जुड़ी होंगी। जिसका विस्तार आधुनिकता के आधार पर अपनी संस्कृति और सभ्यता के साथ होगा। इन प्रयासों में ब्रह्माकुमारीज़ जैसी आध्यात्मिक संस्थाओं की बड़ी भूमिका है। मुझे खुशी है आप आध्यात्म के साथ-साथ शिक्षा स्वास्थ्य और कृषि जैसी कई क्षेत्रों में कई बड़े काम कर रहे हैं। आज जिस अभियान का शुभारंभ कर रहे हैं उसे आप पहले से ही आगे बढ़ा रहे हैं।

मूल्यों का सिंचन कर रही है संस्था

आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर अभियान बहुत ही सराहनीय पहल है। ब्रह्माकुमारीज़ जैसी संस्थाएं इस दिशा में महत्वपूर्ण कार्य कर रही हैं। मानवीय मूल्यों का सिंचन करने का कार्य ब्रह्माकुमारीज़ कर रही है। संस्था के लाखों समर्पित ब्रह्माकुमार भाई-बहन और सेवाकेंद्र अपना विशेष योगदान दे रहे हैं। संस्था ने युवाओं को गलत मार्ग से हटाकर अच्छे सद्मार्ग की ओर लाने और संस्कारों का बीजारोपण करने का कार्य किया है। मन की शांति, चित्त की स्थिरता, आत्मा की शुद्धि और व्यवहार में पवित्रता के लिए समाज में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा सकारात्मक मार्गदर्शन दिया जा रहा है। प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के 53वें अव्यक्त आरोहण दिवस के उपलक्ष्य में आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर अभियान की लांचिंग प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा की जा रही है। पांच हजार सेवाकेंद्रों पर 15 हजार से ज्यादा कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। दस करोड़ से ज्यादा लोगों तक पहुंचने का लक्ष्य रखा है। संस्था द्वारा नई पीढ़ी में राष्ट्र प्रेम, मानवीय मूल्य और समाज के प्रति कर्तव्य बोध जगाने का कार्य किया जा रहा है।

भूपेन्द्र पटेल
मुख्यमंत्री, गुजरात

ब्रह्माकुमारी संस्था से प्रधानमंत्री के तीन बड़े आह्वान-

1. नागरिकों में कर्तव्य भावना का विकास करें-

पीएम मोदी ने आग्रह किया कि ब्रह्माकुमारीज़ जैसी संस्थाएं आने वाले 25 वर्ष के लिए एक मंत्र बना लें कि भारत के जन-जन को कर्तव्य के लिए जागरूक करें। इससे आप लोग बहुत बड़ा बदलाव ला सकते हैं। आप सभी अपनी शक्ति और समय, जन-जन में कर्तव्य बोध जागृत करने में जरूर लगाएं। ब्रह्माकुमारी जैसी संस्था दशकों से कर्तव्य के पथ पर चल रही है। इसी भाव से हम सभी को देश के हर नागरिक के मन में कर्तव्य का दीया जलाना है। इससे समाज में व्याप्त बुराइयां दूर होंगी और देश नई ऊंचाई पर पहुंचेगा।

2. भारत की सही बात को दूसरे देशों तक पहुंचाएं, उन्हें भारत दर्शन के लिए लाएं-

पीएम ने आह्वान किया कि भारत के छवि को धूमिल करने के लिए राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अलग-अलग प्रयास चलते रहे हैं। ऐसे में हमारा दायित्व है कि दुनिया भारत को सही रूप में जाने। ब्रह्माकुमारीज़ जैसी संस्थाएं जिनकी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उपस्थिति है, वह भारत की सही बात को दूसरे देशों में पहुंचाएं। भारत के बारे में जो अफवाएं फैलाई जा रही हैं, उनकी सच्चाई वहां के लोगों को बताएं, उन्हें जागरूक करें। यह भी हम सबका कर्तव्य है। जिन देशों में आपकी शाखाएं हैं, वहां कोशिश करें कि हर शाखा से हर वर्ष कम से कम 500 लोग भारत दर्शन के लिए, जानने के लिए आएं। जब वह यहां आकर हर बात को समझेंगे, देखेंगे तो अपने आप भारत की अच्छाइयों को विश्व में लेकर जाएंगे। आपके प्रयासों से बहुत बड़ा फर्क पड़ जाएगा। आपके यह प्रयास अन्य संस्थाओं के लिए भी आजादी के अमृत महोत्सव में नए लक्ष्य गढ़ने के लिए प्रेरित करेंगे। आपके प्रयासों से आने वाले समय में भारत और भी तेजी से स्वर्णिम भारत की ओर बढ़ेगा।

3. आत्म निर्भर भारत को दें गति, जैविक खेती अपनाने के लिए किसानों को प्रेरित करें-

पीएम मोदी ने आह्वान किया कि ब्रह्माकुमारी संस्था आध्यात्म के साथ शिक्षा, स्वास्थ्य और कृषि जैसे कई क्षेत्रों में कई बड़े-बड़े काम कर रही है। आप आत्मनिर्भर भारत अभियान को भी गति दे सकते हैं। वोकल फॉर लोकल। स्थानीय उत्पादों को गति देकर इस अभियान में बहुत बड़ी मदद हो सकती है। खान-पान की शुद्धता को लेकर ब्रह्माकुमारी बहनें समाज को लगातार जागृत करती रही हैं। साथ ही सात्विक जीवनशैली अपनाने को लेकर आपने लोगों में जनजागरण किया है। ब्रह्माकुमारीज़ प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए बहुत बड़ी प्रेरणा बन सकती हैं। कुछ गांवों को प्रेरित करके ऐसे मॉडल खड़े किए जा सकते हैं।

जहां भेदभाव की कोई जगह न हो-

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि हम एक ऐसी व्यवस्था बना रहे हैं, जिसमें भेदभाव की कोई जगह न हो। एक ऐसा समाज बना रहे हैं जो समानता और सामाजिक न्याय की बुनियाद पर मजबूती से खड़ा है। एक ऐसे भारत को उभरते देख रहे हैं जिसकी सोच और एप्रोच नई है। भारत की सबसे बड़ी ताकत ये है कि कैसा भी समय आए, कितना भी अंधेरा छाए भारत अपने मूल भाव को बनाए रखता है।

देश में कई महान नारियां हुई हैं-

भारत मात्रौशक्ति की पूजा देवी के रूप में करता रहा है। हमारे यहां गार्गी, मैत्रयी, अनुसुईया, अरुंधति, मदालशा जैसी विभूतियां समाज को ज्ञान देती थीं। कठिनाइयों से भरे मध्यकाल में भी देश में पन्नाधाय, मीराबाई जैसी महान नारियां हुई। चित्तूर की रानी चेनम्मा, मतंगनी हाजरा, रानी लक्ष्मीबाई, वीरांगना झलकारी बाई, सामाजिक क्षेत्र में अहिल्याबाई होलकर, सावित्री फुले इन देवियों ने भारत की पहचान बनाए रखी है। आज देश आजादी की लड़ाई में नारी शक्ति के योगदान को भी याद कर रहा है।

क्लीन एनर्जी में बड़े जनजागरण की जरूरत-

क्लीन एनर्जी और पर्यावरण के क्षेत्र में भी दुनिया को भारत से बहुत सारी अपेक्षाएं हैं। इसे लेकर भी जनजागरण के बड़े अभियान की जरूरत है। ब्रह्माकुमारीज़ ने सोलर पॉवर के क्षेत्र में बड़ा उदाहरण रखा है। यहां लंबे समय से आश्रम की रसोई में सोलर पॉवर से खाना बनाया जा रहा है। सोलर पॉवर का इस्तेमाल ज्यादा से ज्यादा लोग करें, इसमें भी आपका विशेष सहयोग हो सकता है। आप सभी आत्म निर्भर भारत को भी विशेष गति दे सकते हैं।

आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर अभियान से दुनिया को भारत की संस्कृति और वैभवशाली परंपरा का ज्ञान मिलेगा। यह कोई साधारण कार्यक्रम नहीं है। आत्मनिर्भर भारत के निर्माण, भारत को समृद्ध बनाने और भारत की गौरवशाली सभ्यता को विश्वभर में पहुंचाने के लिए यह अभियान चलाया जा रहा है। ब्रह्माकुमारीज़ के आयोजनों से दुनिया को नया रास्ता मिलेगा। इसके तहत संस्थान का 15 हजार कार्यक्रमों के जरिए दस करोड़ लोगों तक पहुंचने का लक्ष्य रखा है। यह बहुत ही गर्व का विषय है। भारत की आजादी के बाद अब तक का यह सबसे बड़ा अमृत महोत्सव है जो भारत सरकार द्वारा मनाया जा रहा है।

जी किशन रेड्डी
केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री, भारत सरकार

ये भी रहे शामिल

इस दौरान संसदीय कार्य और संस्कृति केंद्रीय मंत्री अर्जुनराम मेघवाल, राजस्थान के राज्यपाल कलराज मिश्रा, राजस्थान में विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष गुलाब चंद कटारिया, पहलवान रितू फोगाट, केंद्रीय पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री भूपेंद्र यादव, केंद्रीय कृषि और किसान कल्याण राज्यमंत्री कैलाश चौधरी, फिल्म डायरेक्टर सुभाष घई, म्यूजिक कंपोजर ग्रेमी अवार्ड विनर रिक्की केज, संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका बीके मुन्नी भी मौजूद रहीं।

संस्था व्यक्तित्व निर्माण में जुटी

मानव कल्याण के लिए समर्पित ब्रह्माकुमारीज़ संस्था द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर देशव्यापी अभियान चलाने का जो निर्णय लिया गया है वह बहुत ही सराहनीय है। ब्रह्माकुमारीज़ एक विश्व स्तरीय संस्था है जो पिछले आठ दशकों से पूरे संसार में मानव सेवा का पुनीत कार्य कर रही है। व्यक्तित्व निर्माण से राष्ट्र निर्माण का कार्य संस्था कर रही है। आपने राजयोग से समस्त मानवता को साधना और आध्यात्म का मार्ग बताया है। जो अपनी ऊर्जा को सक्रिय करते हुए स्वयं को परमात्मा से जोड़ देता है। मानव सभ्यता के आरंभ से ही भारत आध्यात्मिक चेतना का केंद्र रहा है। आध्यात्मिक जीवनशैली समाज को नई दिशा दिखा रही है। यह अभियान स्वर्णिम भारत की झलक और आधुनिक भारत की छवि दिखाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। स्वर्णिम भारत का निर्माण तभी हो सकता है जब देश का प्रत्येक नागरिक आगे बढ़ने और विकास के लिए सामूहिक प्रयास करे।

ओम बिरला
लोकसभा स्पीकर, नई दिल्ली

प्रधानमंत्री ने सात देशव्यापी अभियानों का किया शुभारंभ

● ब्रह्माकुमारीज़ के युवा प्रभाग, महिला प्रभाग, चिकित्सा प्रभाग, यातायात प्रभाग, शिपिंग-एविएशन प्रभाग, कृषि एंव ग्राम विकास प्रभाग सहित सभी 20 विंग्स के कार्यक्रम देशभर में चलेंगे, ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़े भाई-बहन उमंग-उत्साह के साथ विश्व सेवा में जुटे ● गांव से लेकर महानगरों में प्रत्येक वर्ग के लिए कार्यक्रम

'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' मोटर साइकिल यात्रा: सात दिन में पूरी की यात्रा

» शिव आमंत्रण, आबू रोड (राजस्थान)। ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़े बीके राइडर्स टीम द्वारा 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत मोटर साइकिल यात्रा' आबू रोड से नई दिल्ली तक निकाली गई। इसका शुभारंभ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किया। रैली आबू रोड से अजमेर, जयपुर, ग्रेटर नोएडा होते हुए गुरुग्राम पहुंची, जहां इसका गरिमामय कार्यक्रम के रूप में समापन किया गया।

ये हुए कार्यक्रम: मोटर साइकिल यात्रा के दौरान रास्तेभर ब्रह्माकुमार राइडर्स का स्वागत-सम्मान किया गया। हाईवे पर रिसोर्ट, क्लब, संस्थाओं में कुल मिलाकर 35 से अधिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। इनके माध्यम से लोगों को राजयोग मेडिटेशन और आध्यात्म का संदेश दिया। साथ ही सुरक्षित सड़क यात्रा को लेकर लोगों को प्रेरित किया।

उद्देश्य: यात्रा का उद्देश्य सुरक्षित सड़क यात्रा को बढ़ावा देना रहा। यात्रा में शामिल सभी राइडर्स ने गति, संतुलन और सुरक्षा का संदेश दिया। पूरे सुरक्षा साधनों के साथ निकले इन युवाओं ने रास्ते में आने वाले शहरों में कार्यक्रम के माध्यम से लोगों को जीवन में आध्यात्म और राजयोग मेडिटेशन अपनाने के लिए प्रेरित किया।

1

कृषि-ग्राम विकास प्रभाग: आत्मनिर्भर किसान अभियान

» कृषि एंव ग्राम विकास प्रभाग की ओर से देशव्यापी 'देश की शान आत्मनिर्भर किसान अभियान' का शुभारंभ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा किया गया। इस अभियान के तहत देशभर में खेती-किसानी से जुड़े ग्रामीण, किसान वर्ग, सरकारी अधिकारी, कृषि वैज्ञानिक, सरपंच आदि के लिए सभा और सम्मेलनों का आयोजन किया जाएगा।

ये होंगे कार्यक्रम: 75 किसान सशक्तिकरण अभियान
- 75 किसान सम्मेलन
- 75 शाश्वत यौगिक खेती ट्रेनिंग कार्यक्रम
- 75 कृषि वैज्ञानिकों के लिए कार्यक्रम
- 75 कृषि अधिकारियों के लिए कार्यक्रम
- 75 सरपंच सम्मेलन

उद्देश्य: किसानों को व्यसनमुक्त बनाना। आध्यात्मिकता का विकास। किसानों की आर्थिक खुशहाली, तरक्की, उन्नति की राह प्रशस्त करना। जैविक-यौगिक खेती को बढ़ावा देना। किसानों को प्रशिक्षण देकर जैविक खेती का महत्व बताना। सरपंचों को गांव के संपूर्ण विकास के लिए प्रेरित करना।

2

महिला प्रभाग: महिलाएं- नए भारत की ध्वजवाहक अभियान

» महिला प्रभाग द्वारा 'महिलाएं-नए भारत की ध्वजवाहक अभियान' की शुरुआत की गई। अभियान के माध्यम से महिलाओं को उनका महत्व बताना, उन्हें रचनात्मक कार्यों की ओर प्रेरित करके आध्यात्मिकता का विकास करना। भारत की पुरातन संस्कृति को बढ़ावा देना है।

ये होंगे कार्यक्रम: महिला सशक्तिकरण द्वारा समाज परिवर्तन विषय पर सम्मेलन एवं अभियान का आयोजन। बेटी बचाओ-शसक्त बनाओ और सुखी पारिवारिक जीवन के लिए मूल्य, संस्कार परिवर्तन एवं व्यवहार शुद्धि विषय पर सभा, सम्मेलन, संगोष्ठियों का आयोजन। रंगोली प्रतियोगिता, मेंहदी, व्यंजन बनाना, क्विज प्रतियोगिता आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन।

उद्देश्य: महिलाओं में आध्यात्मिकता और मूल्यों का विकास करके समाज परिवर्तन में उनकी भूमिका के प्रति कर्तव्यबोध कराना। बेटी बचाओ-सशक्त बनाओ की भावना का विकास करना। सुखी पारिवारिक जीवन के लिए मूल्यों को जीवन में अपनाने पर जोर देना।

3

युवा प्रभाग: शांति की शक्ति बस अभियान, 75 शहर पहुंचेगा

» युवा प्रभाग द्वारा शुरू किए गए देशव्यापी शांति की शक्ति बस अभियान का शुभारंभ भी प्रधानमंत्री ने किया। यह अभियान देश के 75 शहरों और तहसीलों में पहुंचेगा। इसके लिए खासतौर पर एक बस डिजाइन की गई है, जिसमें युवाओं को प्रेरित करने के लिए 3डी चित्रों के माध्यम से सजाया गया है। बीके भाई-बहनों का दल शामिल रहेगा।

ये होंगे कार्यक्रम: 75 डिजाइन योर डेस्टिनी कार्यक्रम। 75 दिव्य युवा मंच के तहत स्व सशक्तिकरण कार्यक्रम। राइज टू द वर्ल्ड कार्यक्रम के तहत स्वच्छ भारत, पौधारोपण और रक्तदान अभियान आयोजित किए जाएंगे।

उद्देश्य: युवाओं में बढ़ रहे तनाव को दूर करके उन्हें श्रेष्ठ लक्ष्य की ओर अग्रेसित करना। नशामुक्त करके स्वर्णिम भारत के निर्माण में सहयोगी बनाना। उनमें आध्यात्मिकता का विकास और सकारात्मक प्रेरणा से देशभक्ति और स्व उन्नति की ओर प्रेरित करना। प्रकृति से जोड़ने के लिए पौधारोपण अभियान, स्वच्छता अभियान और समाजसेवा का भाव जागृत करने के लिए रक्तदान शिविर लगाए जाएंगे।

4

यातायात प्रभाग: सुरक्षित भारत सड़क सुरक्षा बाइक यात्रा

» यातायात प्रभाग द्वारा शुरू की गई 'सुरक्षित भारत सड़क सुरक्षा मोटर साइकिल यात्रा' का शुभारंभ भी प्रधानमंत्री मोदी ने वर्चुअल बटन दबाकर किया। यात्रा आबू रोड से बीकानेर के लिए रवाना की गई।

ये होंगे कार्यक्रम: 75 शहर/तहसीलों में सड़क सुरक्षा से जुड़े आयोजन होंगे। इनमें 75 मोटर साइकिल यात्रा और 75 शहरों को कवर किया जाएगा। खास बात ये है कि इनका शुभारंभ और समापन भारत के ऐतिहासिक स्थलों से किया जाएगा। स्कूल, कॉलेज, आरटीओ, पुलिस स्टेशन, पेट्रोल पम्प, ट्रांसपोर्ट कार्पोरेशन आदि स्थानों पर कार्यक्रम होंगे।

उद्देश्य: सड़क दुर्घटनाओं को कम करने और रोकने के लिए लोगों को सड़क सुरक्षा के नियम बताना और यातायात के नियमों के मुताबिक वाहन चलाने के लिए प्रेरित करना। वाहन सीमित गति में चलाने, सुरक्षा संकेतों का महत्व बताने के लिए कार्यक्रम। साथ ही स्पीड, सेफ्टी और स्प्रीचुअलिटी का आपस में संबंध स्पष्ट करना। ताकि लोग असमय दुर्घटना में काल के गाल में समाने से बच सकें।

5

शिपिंग एविएशन टूरिज्म प्रभाग: मेरा देश- मेरी शान अभियान

» शिपिंग एविएशन टूरिज्म विंग की ओर से देशव्यापी 'मेरा देश, मेरी शान अभियान' की शुरुआत की गई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विरासत स्थलों के लिए समर्पित 'अनदेखा भारत साइकिल यात्रा' का शुभारंभ किया। ये यात्राएं देशभर में अलग-अलग सेवाकेंद्रों से निकाली जाएंगी।

ये होंगे कार्यक्रम: सच्चे भारतीय नायकों का सम्मान समारोह, पदयात्राएं, पारंपरिक वेशभूषा प्रतियोगिता, विरासत स्थलों के लिए साइकिल यात्रा, भारत हमको जान से प्यारा- प्रतिज्ञा पत्र, मातृभूमि को लोगों द्वारा पत्र लिखवाए जाएंगे। सात्विक जीवनशैली पर टॉक शो और प्रश्न-उत्तर का आयोजन।

उद्देश्य: मेरा देश-मेरी शान अभियान का उद्देश्य नागरिकों को भारत की प्राचीन और पुरातात्विक धरोहर तक पहुंचकर उनका ऐतिहासिक, पौराणिक और धार्मिक महत्व से रुबरु कराना, पुरातन संस्कृति और सभ्यता को बढ़ावा देना है। साथ ही सात्विक जीवनशैली को अपनाने के लिए लोगों को प्रेरित करना, मातृभूमि के प्रति सच्ची देशभक्ति की भावना का विकास करना है।

6

चिकित्सा प्रभाग: माई इंडिया-हेल्दी इंडिया

» चिकित्सा प्रभाग की ओर से राष्ट्रीय माई इंडिया-हेल्दी इंडिया अभियान की लांचिंग की गई। इसके तहत पहले चरण में मुख्यालय आबू रोड में कोविड-19 टीकाकरण एवं जागरूकता अभियान चलाया गया। मेडिकल विंग की ओर से पांच एंबुलेंस और 40 मेडिकल स्टाफ की टीम ने गांव-गांव जाकर वैक्सीनेशन किया।

ये होंगे कार्यक्रम: कोविड-19 टीकाकरण एवं जागरूकता अभियान। देशभर के अलग-अलग नर्सिंग व मेडिकल कॉलेजों में कार्यक्रम, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों में 75 कार्यक्रम, गर्भ संस्कार विषय पर 75 कार्यक्रम, फॉर्मासिस्ट और चिकित्सा प्रतिनिधियों के लिए सम्मेलन और कैंसर जांच शिविर का आयोजन।

उद्देश्य: कोविड-19 टीकाकरण एवं जागरूकता अभियान के माध्यम से लोगों में वैक्सीनेशन के लेकर व्याप्त भय, शंका और अफवाहों को दूर करने उन्हें वैक्सीन लगवाने के लिए काउंसलिंग करना, बीके मेडिकल टीम द्वारा टीकाकरण करना है। साथ ही मेडिकल क्षेत्र से जुड़े लोगों को आध्यात्मिकता का संदेश देना है।

7

राजयोगी राइडर्स ने सात दिन में पूरी की 1600 किमी की यात्रा

'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' मोटर बाइक अभियान: आबू रोड से गुरुग्राम का सफर किया तय

शांतिवन में मोटर बाइक अभियान यात्रा के लौटने पर बीके राइडर्स का वरिष्ठ पदाधिकारियों का किया गया सम्मान।

शिव आमंत्रण, आबू रोड (राजस्थान)। एक भारत-श्रेष्ठ भारत का संकल्प लेकर शांतिवन से निकले बालब्रह्मचारी, राजयोगी ब्रह्माकुमार राइडर्स सात दिन में 1600 किमी की यात्रा कर वापस लौट आए। इस बीच कड़ाके की ठंड, बारिश और सर्द हवाओं के झोंके इन राजयोगी राइडर्स का उत्साह कम नहीं कर सके। अजमेर, जयपुर, दिल्ली एनसीआर होते हुए मोटर बाइक अभियान 25 जनवरी को हरियाणा के गुरुग्राम पहुंचा। रास्तेभर कई क्लब और संगठनों द्वारा राइडर्स का पुष्पवर्षा कर सम्मान किया गया। सात दिन में 35 कार्यक्रम के माध्यम से लोगों को राजयोग मेडिटेशन, स्वर्णिम भारत निर्माण और श्रेष्ठ भारत के प्रति जागरूक कर संदेश दिया गया।

यात्रा पूरी कर राइडर्स के शांतिवन पहुंचने पर सम्मान समारोह आयोजित किया गया। आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर राष्ट्रीय अभियान के शुभारंभ पर 20 जनवरी को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वर्चुअल हरी झंडी दिखाकर शांतिवन से गुरुग्राम मोटर बाइक अभियान का शुभारंभ किया था।

समारोह में संस्थान के कार्यकारी सचिव बीके मृत्युंजय, पांडव भवन दिल्ली की निदेशिका बीके पुष्पा दीदी, खेल प्रभाग के मुख्यालय संयोजक बीके मोहन ने बाइक राइडर्स के हौसले और साहस की सराहना की। मधुरवाणी ग्रुप ने देशभक्ति गीत की प्रस्तुति दी।

20
जनवरी को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने किया था वर्चुअल शुभारंभ

35
से अधिक कार्यक्रम अभियान के दौरान आयोजित

10
राइडर्स मोटर बाइक अभियान में थे शामिल

27
जनवरी को वापस शांतिवन पहुंचे राइडर्स

राइडर्स टीम में ये भी रहे शामिल
मोटर बाइक अभियान टीम में बीके शक्तिराज, बीके प्रदीप, बीके मंजुनाथ, बीके प्रीतम, बीके राजेंद्र, बीके ऋषि, बीके श्रीधर और बीके पराशुमन भी शामिल रहे।

पहले दिन 350 किमी की दूरी तय की
पहले दिन 350 किमी की यात्रा पूरी कर अजमेर पहुंचे। जहां दूसरे दिन अजमेर से जयपुर पहुंचे। यहां विभिन्न संगठनों में राजयोग मेडिटेशन का संदेश दिया। तीसरे दिन दिल्ली से एनसीआर फिर गुरुग्राम पहुंचे, जहां समापन समारोह आयोजित किया गया।

- **बीके जयसिम्हा,** टीम लीडर व डायरेक्टर, सोलर पॉवर प्रोजेक्ट, शांतिवन, आबू रोड

दस साल से कर रहे हैं बाइक राइड
हम लोग राजयोग मेडिटेशन के साथ दस साल से बाइक राइड कर रहे हैं। बाइक से लद्दाख की यात्रा भी कर चुके हैं। इस दौरान कई विषम परिस्थितियों का सामना किया लेकिन कभी हमारा हौसला कमजोर नहीं हुआ। यह देखकर अन्य राइडर्स ने भी मेडिटेशन सीखने की इच्छा जताई।

- **बीके व्यंकटेश,** टीम लीडर व डायरेक्टर, फिल्म डिवीजन डिपार्टमेंट, शांतिवन, आबू रोड

18 हजार फीट पर फहराया शिव ध्वज
एक बार हमारी टीम के राइडर्स 18 हजार फीट की ऊंचाई पर परमात्मा शिव बाबा का ध्वज लहरा चुके हैं। वहां जाकर लोगों को राजयोग मेडिटेशन का भी संदेश दिया है। भारत में राइडर्स के 5 हजार ग्रुप हैं जिन्हें जोड़ने का लक्ष्य हमारी टीम ने रखा है।

- **बीके राजशेखर,** टीम लीडर व संचालक, किचन विभाग, शांतिवन, आबू रोड

देशभर में कार्यक्रम करने का लक्ष्य
शांतिवन के राजयोगी, बालब्रह्मचारी राइडर्स टीम ने देशभर में कार्यक्रम आयोजित करने का लक्ष्य रखा है। हमें बहुत गर्व होता है कि राजयोगी राइडर्स की टीम अपने शौक के साथ लोगों को आध्यात्म और राजयोग मेडिटेशन का भी संदेश दे रही है।

- **बीके जगबीर,** राष्ट्रीय समन्वयक, खेल प्रभाग, ब्रह्माकुमारीज़, शांतिवन, आबू रोड

रंगोली में उकेरे मन के भाव

1000 रंगोली प्रतियोगिता देशभर में आयोजित

400 कविताएं बीके भाई-बहनों ने लिखीं

- आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर अभियान के तहत आयोजन
- ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़े भाई-बहनों ने उत्साह से लिया रंगोली प्रतियोगिता में भाग

शिव आमंत्रण, आबू रोड (राजस्थान)। मन की कल्पनाओं और भावनाओं को जब ब्रह्माकुमार भाई-बहनों ने रंगोली के माध्यम से आकार दिया तो स्वर्णिम भारत की झलक साकार हो उठी। आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर अभियान के तहत देशभर में ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के 1000 से अधिक सेवाकेंद्रों पर रंगोली बनाओ प्रतियोगिता आयोजित की गई। इसमें लोगों ने उत्साह के साथ बढ़चढ़कर भाग लिया। साथ ही कविता प्रतियोगिता में देशभर से 400 से अधिक कविताएं अमृत महोत्सव और स्वर्णिम भारत को लेकर लिखी गईं। इन कविताओं में स्वर्णिम भारत की झलक के साथ नवयुग, राष्ट्रप्रेम, पुरातन भारतीय संस्कृति, सभ्यता और आध्यात्म के साथ हमारी धरोहर योग को शब्दों के माध्यम से आकार दिया गया। इसमें मुख्य रूप से संस्थान के अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय शांतिवन आबू रोड, शांति सरोवर रायगढ़, छग, ओआरसी दिल्ली सहित अन्य स्थानों पर बड़े आकार की रंगोली बनाई गई। इसमें भारत माता को स्वर्णिम आभा से ओतप्रोत और सुख-शांति संपन्न दुनिया को दिखाया गया।

देश की खुशहाली, तरक्की की उकेरी तस्वीर...
देशभर में सेवाकेंद्रों पर बनाई गई रंगोली के माध्यम से आजादी के संघर्ष की गाथा, वीर जवान, आजादी के सिपाही के साथ भारत की विरासत, प्राचीन धरोहरें, स्वच्छ पर्यावरण, जल संरक्षण, पर्यावरण संरक्षण, मेरा भारत- स्वर्णिम भारत, तकनीकी और वैज्ञानिक सक्षमता और देश की खुशहाली और तरक्की की तस्वीर इन रंगोली के माध्यम से उकेरी गई।

मेडिकल विंग का वैक्सीनेशन और जागरूकता अभियान

21 जनवरी से 31 जनवरी तक चला अभियान

05 एंबुलेंस ने प्रथम चरण में सेवाएं दीं

30 गांव किए गए कवर

10 दिन आबू रोड तहसील में चला अभियान

40 मेडिकल स्टाफ ने दीं सेवाएं

शिव आमंत्रण, आबू रोड। ब्रह्माकुमारीज़ की सहयोगी संस्था राजयोग एजुकेशन एंड रिसर्च फाउंडेशन के मेडिकल विंग द्वारा कोविड-19 टीकाकरण और जागरूकता अभियान शुरू किया गया। इसे आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर अभियान के तहत चलाया जा रहा है। संस्थान के कार्यकारी सचिव बीके मृत्युंजय और मेडिकल विंग के सचिव डॉ. बनारसी लाल शाह ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। मेडिकल विंग और सिविल हॉस्पिटल की टीम द्वारा 21 जनवरी से 31 जनवरी तक आबू रोड तहसील के गांव-गांव जाकर लोगों को वैक्सीन लगाई गई। साथ ही ग्रामीणों में वैक्सीन को लेकर जो भ्रम की स्थिति है उसे दूर किया गया। पांच एंबुलेंस में 40 लोगों की टीम ने पहले चरण में 30 गांव कवर किए। एक हजार से अधिक लोगों को वैक्सीन लगाई गई। अभियान में डॉ. पूर्वी, बीके कृष्णा और बीके पवित्र व अन्य भाई-बहनों ने सेवाएं दीं।

समाधान परक पत्रकारिता की जरूरत: प्रो. द्विवेदी

भारतीय जनसंचार संस्थान के निदेशक प्रो. संजय द्विवेदी ने रखे अपने विचार

शिव आमंत्रण, आबू रोड। वर्तमान परिस्थितियों के हिसाब से आज देश में समाधान परक पत्रकारिता की जरूरत है। पश्चिमी देशों में नकारात्मक खबरों को प्रमुखता से स्थान दिया जाता रहा है, जिसका अनुशरण भारतीय मीडिया ने भी किया है। हमारे देश में शास्त्रार्थ करके किसी समस्या का समाधान निकालने की परंपरा रही है। समाज में बदलाव और समृद्ध भारत के स्वप्न को साकार करने के लिए मीडिया को प्रमुखता से अपनी जिम्मेदारी निभाना होगी। मीडिया समाचारों में समस्या के साथ समाधान पर भी बात करे। इससे बेहतर समाज का निर्माण हो सकेगा। उक्त उद्गार नई दिल्ली स्थित भारतीय जनसंचार संस्थान के निदेशक प्रो. संजय द्विवेदी ने व्यक्त किए। वह ब्रह्माकुमारीज की सहयोगी संस्था राजयोग एजुकेशन एंड रिसर्च फाउंडेशन के मीडिया विंग द्वारा शांतिवन में आयोजित तीन दिनी राष्ट्रीय मीडिया ट्रेनिंग को ऑनलाइन संबोधित कर रहे थे। इस दौरान मीडिया विंग द्वारा देशभर में होने वाली सभा, सम्मेलन कार्यक्रमों की राष्ट्रीय लांचिंग की गई। संस्थान के कार्यकारी सचिव बीके मृत्युंजय, मीडिया विंग के उपाध्यक्ष बीके आत्म प्रकाश, नेशनल को-ऑर्डिनेटर बीके सुशांत, पीआरओ बीके कोमल, ओम शांति पत्रिका के संपादक बीके गंगाधर ने भी अपने विचार व्यक्त किए। वरिष्ठ पदाधिकारियों का सम्मान किया।

● प्रो. संजय द्विवेदी, निदेशक, भारतीय जन संचार संस्थान, नई दिल्ली

शांतिवन में तीन दिवसीय मीडिया ट्रेनिंग एवं योग-तपस्या भट्टी आयोजित

हमें स्वर्णिम भारत का निर्माण करना है

हमें स्वर्णिम भारत का निर्माण करना है। हमारी ऋषि परंपरा, वसुधैव कुटुबकम् की परंपरा रही है। ऋषि लोककल्याण के लिए होते हैं। पत्रकारिता का काम सिर्फ सवाल खड़े करना ही नहीं है, बल्कि लोकोपकारक समाधान भी प्रस्तुत करना है। पत्रकारिता पर नवनिर्माण की बड़ी जिम्मेदारी है।

● प्रो. बलदेव भाई शर्मा, कुलपति, कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय, रायपुर, छग

सभी मिलकर करेंगे काम

ब्रह्माकुमारीज़ के मीडिया विंग ने जो समाधान परक पत्रकारिता का बीड़ा उठाया है उसमें विश्वविद्यालय परिवार पूरे मनोभाव से आपके साथ खड़ा है। हम सभी मिलकर मीडिया हाऊस, पत्रकार संगठन आदि में कार्यक्रमों के जरिए उक्त विषय पर चिंतन-मनन और प्रशिक्षण कार्य करेंगे।

● प्रो. केजी सुरेश, कुलपति, माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल, मप्र

विश्व एक परिवार है

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान स्थापना के समय से ही एक विश्व, एक ईश्वर, एक परिवार की थीम के साथ कार्य कर रही है। इसी उद्देश्य को पूरा करने के लिए दिनरात सेवा में जुटी है। मीडिया में जनमानस और समाज का नजरिया और सोच बदलने की ताकत है। वर्षभर चलने वाले इस अभियान के तहत पत्रकारों को समाधान परक पत्रकारिता की ओर से अग्रसर करने में हमारा प्रयास रहेगा। इसके लिए देशभर में कार्यक्रम किए जाएंगे।

● बीके करुणा, अध्यक्ष, मीडिया विंग, ब्रह्माकुमारीज़, शांतिवन

सभी मिलकर करेंगे काम

यहां से प्रशिक्षण लेकर आप सभी अपने-अपने कार्यक्षेत्र में सभा, सम्मेलन और गोष्ठीयों का आयोजन करें। साथ ही पत्रकारों को उपरोक्त विषय पर कार्य करने के लिए प्रेरित करें।

● बीके शांतनु, मुख्यालय समन्वयक, मीडिया विंग, शांतिवन

रैली से दिया कैंसर से बचने का संदेश

विश्व कैंसर दिवस: मेडिकल विंग ने आबू रोड के तलहटी क्षेत्र में निकाली जनजागरूकता रैली

शिव आमंत्रण, आबू रोड। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के मेडिकल विंग की ओर से विश्व कैंसर दिवस पर तलहटी क्षेत्र और शांतिवन परिसर में जन जागरूकता रैली निकाली गई। आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर अभियान के तहत निकाली गई इस रैली में बीके भाई-बहनें हाथों में कैंसर से बचाव का संदेश देतीं तख्तियां, बैनर और पोस्टर लेकर चल रहे थे। रैली को हरी झंडी दिखाते हुए ग्लोबल हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर, माउंट आबू के डायरेक्टर डॉ. प्रताप मिड्ढा ने कहा कि राजयोग मेडिटेशन ही वह संजीवनी बूटी है जिसके प्रयोग और अभ्यास से हम कैंसर जैसी गंभीर बीमारी से बच सकते हैं। इससे हमारी बॉडी में पॉजीटिव सेल्स बढ़ते हैं जो निगेटिव सेल्स को खत्म करते हैं। 3डी हार्टकेयर तकनीक डायरेक्टर डॉ. सतीश गुप्ता ने कहा कि हमें जीवन में संयमित रहते हुए जीना होगा। मेडीकल विंग के सचिव डॉ. बनारसी लाल शाह ने कहा कि ज्यादातर बीमारियों का कारण मानसिक अस्वस्थता ही है। जिसका निदान राजयोग मेडिटेशन में समाया हुआ है।

1000+
सहभागी

01
किमी लंबी रैली

जरूरतमंदों के लिए बांटे कंबल

ग्राम उपलाखेजड़ा में जरूरतमंदों के लिए कंबल वितरित करते हुए बीके यशवंत।

शिव आमंत्रण, आबू रोड। ग्राम पंचायत उपलाखेजड़ा में रेडियो मधुबन की ओर से आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर अभियान के तहत कंबल वितरण किया गया। ग्रामीणों को राजयोग मेडिटेशन का महत्व बताते हुए जीवन में अपनाने की सीख दी। रेडियो मधुबन (90.4 एफएम) के स्टेशन हैड बीके यशवंत पाटिल ने कहा कि रेडियो मधुबन का प्रयास रहा है कि आप लोगों को अपनी बोली में लोकसंगीत और ज्ञानवर्द्धक जानकारी पहुंचाई जाए। ग्रामीणों ने कहा कि हम सभी लोग रोजाना रेडियो मधुबन मोबाइल पर सुनते हैं। आरजे रमेश ने राजयोग मेडिटेशन के फायदों से रूबरु कराया। सरपंच रेखा देवी गरासिया ने जरूरतमंदों की मदद के लिए रेडियो मधुबन के प्रयासों की सराहना करते हुए इसे समाजसेवी कदम बताया। इस दौरान पंचायत समिति सदस्य देवाराम गरासिया, रेशमा राम गरासिया, ऋषि, विनोद सिंघानिया सहित पास की ग्राम पंचायत के पंचायत प्रतिनिधि, महिलाएं, बच्चे और बुजुर्ग मौजूद रहे।

तलहटी क्षेत्र में चलाया स्वच्छता अभियान

- ब्रह्माकुमार भाई-बहनों ने थामी झाड़ू सड़कों को किया साफ
- आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर अभियान के तहत आयोजन

200+
सहभागी

50+
ब्रह्माकुमारी बहनों ने भी थामीं झाड़ू

शिव आमंत्रण, आबू रोड (निप्र)। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान द्वारा तलहटी क्षेत्र में आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर अभियान के तहत स्वच्छता अभियान चलाया गया। इसमें 200 से अधिक भाई-बहनों ने हाथों में झाड़ू थामकर सड़क के दोनों ओर सफाई की। साथ ही आसपास के लोगों से अपने घरों व दुकानों के पास सफाई रखने की समझाइश दी। सफाई अभियान में बच्चों से लेकर बुजुर्ग भाई-बहनों ने भाग लिया और उत्साह के साथ साफ-सफाई की। कचरे को पॉलीथिन बैग में भरकर ट्रॉली से ट्रेंचिंग ग्राउंड भिजवाया गया। संस्थान के कार्यकारी सचिव बीके मृत्युंजय ने कहा कि देशभर में संस्थान से जुड़े सेवाकेंद्रों पर सफाई अभियान चलाया जाएगा। मेरा सभी दुकानदारों और नागरिकों से आह्वान है कि अपने घरों और दुकानों को आसपास सफाई बनाकर रखें। दुकान के बाहर एक डस्टबिन जरूर लगाएं। इस मौके पर ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के पीआरओ बीके कोमल, बीके शिविका, बीके भानु, बीके बुरहान सहित दो सौ से अधिक भाई-बहनों ने भाग लिया।

कमी की निशानी कमान है, इसलिए कमियों को निकाल कमाल करो!

संपादकीय

शक्ति स्वरूप महिला बन सकती है देवी

मार्च 2022 का महीना शक्ति स्वरूप बनने का महीना है। क्योंकि इस महीने की पहली तारीख को ही महाशिवरात्रि का पर्व है। जो परमात्मा शिव के इस दुनिया में अवतरित होकर नारी को लक्ष्मी और नर को नारायण जैसा बनाने की शिक्षा का यादगार दिवस है। दूसरा 8 मार्च को महिला दिवस है। जिस दिन पूरी दुनिया में महिलाओं के अधिकारों और उसे शक्ति स्वरूपा बनाने की चर्चा की जाती है। 11 मार्च को ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी की पहली पुण्यतिथि है। जबकि 25 मार्च को वर्तमान संस्थान प्रमुख राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी जी का 98वां जन्मदिन है। इसके साथ ही 27 मार्च को संस्थान की पूर्व प्रमुख राजयोगिनी दादी जानकी जी की द्वितीय पुण्य तिथि है। तीनों ही इवेंट इस बात का प्रतीक है कि नारी के शक्ति स्वरूप की ही यादगार है। यह महीना इसलिए खास है कि अर्धनारेश्वर परमात्मा शिव की जयंती और महिला दिवस दोनों ही अपने आप में विशेष हैं। इस दिन यदि हम शिवरात्रि पर परमात्मा शिव की स्मृति में अपने अंदर की बुराईयों को समाप्त करते हुए जीवन में मूल्यों को स्थान दें तो यह जीवन में साधारण से दिव्य बन जाएगा। यह सही वक्त है कि हम अपने शक्ति स्वरूप को पहचानें और खुद के साथ दुनिया से बुराईयों को विदा करें। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान पूरी दुनियाभर में नारी को शक्ति बनाने का महान कार्य किया है। इसलिए इन अनुभवों का लाभ लेकर जीवन को महान बनाने का प्रयास करना चाहिए।

बोध कथा/जीवन की सीख

शिष्यों की मन की हालात

संसार में घटनाएं समान रूप से घटती हैं कोई उन्हीं घटनाओं से सुख प्राप्त करता है, कोई दुःखी होता है

एक बार एक सेठ ने पंडित जी को निमंत्रण दिया। लेकिन पंडितजी का एकादशी का व्रत था तो वह जा नहीं सके। इसकी जगह उन्होंने अपने दो शिष्यों को सेठ के यहां भोजन के लिए भेज दिया। जब दोनों शिष्य वापस लौटे तो उनमें एक शिष्य दुःखी और दूसरा प्रसन्न था। पंडित जी को देखकर आश्चर्य हुआ और पूछा बेटा क्यों दुःखी हो - क्या सेठ ने भोजन में अंतर कर दिया? नहीं गुरु जी। क्या सेठ ने आसन में अंतर कर दिया? नहीं गुरु जी, क्या सेठ ने दक्षिणा में अंतर कर दिया ? नहीं गुरु जी। अब तो गुरु जी को और भी आश्चर्य हुआ और पूछा फिर क्या कारण है? जो तुम दुखी हो? इस पर दुःखी शिष्य बोला- गुरु जी मैं तो सोचता था सेठ बहुत बड़ा आदमी है। कम से कम 10 रुपये दक्षिणा देगा, पर उसने 2 रुपये दिए, इसलिए मैं दुःखी हूं। अब दूसरे से पूछा तुम क्यों प्रसन्न हो? उसने कहा- गुरु जी मैं जानता था सेठ बहुत कंजूस है, आठ आने से ज्यादा दक्षिणा नहीं देगा पर उसने 2 रुपए दे दिए तो मैं प्रसन्न हूं। यही हमारे मन का हाल है। संसार में घटनाएं समान रूप से घटती हैं पर कोई उन्हीं घटनाओं से सुख प्राप्त करता है, कोई दुखी होता है। असल में न दुःख है, न सुख। ये हमारे मन की स्थिति पर निर्भर है। इसलिए मन प्रभु में लगाओ।

क्योंकि-कामना पूरी न हो तो दुःख और कामना पूरी हो जाए तो सुख। लेकिन यदि कोई कामना ही न हो तो आनंद... जिस शरीर को लोग सुंदर समझते हैं। मौत के बाद वही शरीर सुंदर क्यों नहीं लगता? उसे घर में न रखकर जला क्यों दिया जाता है? जिस शरीर को सुंदर मानते हैं। जरा उसकी चमड़ी तो उतार कर देखो। तब हकीकत दिखेगी कि भीतर क्या है? भीतर तो बस रक्त, रोग, मल, और कचरा भरा पड़ा है। फिर यह शरीर सुंदर कैसे हुआ?

संदेश: शरीर में कोई सुंदरता नहीं है। सुंदर होते हैं व्यक्ति के कर्म, उसके विचार, वाणी, व्यवहार, संस्कार और उसका चरित्र। जिसके जीवन में यह सब है, वही इंसान दुनिया का सबसे सुंदर शख्स है।

राजनीति में उन्नति के लिए मेडिटेशन जरूरी

मेरी कलम से

अंबादास दानवे
महाराष्ट्र विधान परिषद के सदस्य व शिवसेना पार्टी के प्रवक्ता

पढ़ाई मैंने सिर्फ 6 क्लास किया। मगर मेहनत से सब कुछ संभव हो सका...

मैं छह साल पहले ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ा हूं। यहां सात दिन का राजयोग मेडिटेशन का कोर्स करने के बाद मेरे धर्म और आध्यात्म से जुड़े कई सवालों के जवाब मिल गए। राजनीतिक जीवन में रोजाना अनेकों लोगों से मिलना होता है। उनकी समस्याओं को सुलझाना और काम कराना होता है। एक साथ कई तरह के चैलेंज होते हैं। ऐसे में राजयोग के अभ्यास से हम खुद को प्रसन्न और खुशहाल रख पाते हैं। व्यक्ति को निजी जिंदगी के साथ राजनीतिक जीवन में भी तरक्की के लिए आध्यात्म और योग जरूरी है। मेडिटेशन के अभ्यास से मेरी जिंदगी में इतने बदलाव आए हैं जिन्हें मैं बता नहीं सकता हूं। पहले जहां देर से सोकर उठता था वहीं अब सुबह 4 बजे उठकर परमात्मा का ध्यान करता हूं। परमात्मा के महावाक्यों को सुनता हूं। इससे हमें दिनभर के लिए सही गाइडेंस मिल जाता है और मन में सदा सकारात्मक चिंतन बना रहता है। राजयोग सीखने के बाद मेरे सोचने, कार्य करने का नजरिया सकारात्मक हो गया है। यहां समाज बदलाव के लिए कई अभियान चलाए जा रहे हैं। स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन के इस संकल्प से स्वर्णिम युग आ रहा है। ये संस्था ही स्वर्णिम युग ला सकती है। संस्था से जुड़ने के बाद व्यक्ति के जीवन में निश्चित तौर पर परिवर्तन आता है। आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर जैसे अभियान से ही भारत में स्वर्णिम युग लाने के सपने को साकार कर सकते हैं।

महान जीवन और पवित्र स्वरूप...

जीवन का मनोविज्ञान भाग - 44

डॉ. अजय शुक्ला
बिहेवियर साइंटिस्ट, गोल्ड मेडलिस्ट इंटरनेशनल ह्यूमन राइट्स मिलेनियम अवार्ड डायरेक्टर
(स्प्रीचुअल रिसर्च स्टडी एंड एजुकेशनल ट्रेनिंग सेंटर, बंजारी, देवास, मप्र)

सद्गुणों की आत्मिक अनुभूति का नैसर्गिक स्वरूप

अंतर्मन से अंतर्मुखी जीवन में समर्पण का बोध परमात्म ज्ञान के प्रति निष्ठा को प्रतिपादित करता है जिससे स्वयं का परिवर्तन ही रूपांतरण के संदर्भ में पवित्रता का आधार बनता है। महान जीवन के लिए पवित्रता की स्वीकारोक्ति ईश्वरीय सत्ता में मगन होने की श्रेष्ठ अवस्था है जिसमें लगन-मनन की अनुभूति का धारणात्मक पक्ष प्रमुख होता है। आत्म और परमात्मा ज्ञान से स्वयं को शक्तिशाली बनाकर बेहद की वैराग्यवृत्ति का निज सुख न्यारे एवं प्यारे स्वरूप का स्तंभ है, जिसमें पूज्य भाव समाहित रहता है। परिवर्तन की प्रक्रिया में स्वयं को ढालकर गुणवान स्वरूप में आधारमूर्त, उद्धारमूर्त, कल्याणकारी व्यवहार आत्मजगत को अनुभवीमूर्त बनाता है। जो उदाहरण मूर्त मंगलकारी साक्षात्कार मूर्त स्वरूप की अभिव्यक्ति का केंद्र है। एकाग्रता से विकसित चिंतनशीलता आत्मा का नैसर्गिक गुण है जो अंतर्जगत से विजयी मूर्त स्वरूप में सफलताओं की उपलब्धि पूर्ण गरिमा से पूर्णतः निश्चिंत कर देता है।

चेतना की प्रवृत्ति में पवित्र आत्मिक स्वरूप

पवित्र आत्मिक स्वरूप की संपूर्णता जीवन की वह श्रेष्ठतम प्राप्ति है जिसके परिदृश्य में चेतना की ऊर्द्धगामी चिंतनशील अवस्था का आभामंडल महत्वपूर्ण घटक के रूप में प्रेरणादाई भूमिका निभाता है। चेतना से जुड़ी गतिशीलता को ईश्वरीय शक्ति निरंतर प्रवाहमान बनाए रखती है, जिसमें आत्म तत्व और परमात्मा से सर्वसंबंध निभाने की स्मृति का नैसर्गिक बल कार्यरत रहता है। आत्मचित्र का चरित्र जब पूर्ण चैतन्य होकर मुखरित होता है, तब सूक्ष्म शक्तियों एवं गुणों का स्वरूप व्यावहारिक जगत में आत्मिक संपन्नता का प्रामाणिक आधार बन जाता है। संतुष्टिगत स्वरूप आत्मा की उच्चता को स्थिरता द्वारा स्वदर्शन से बेहद की प्राप्ति के साथ कर्मजगत की पवित्रता से आंतरिक आनंद को पूर्णता प्रदान करने में सहायक होता है। आत्मगत महानता, समर्थ प्रबल पुरुषार्थ से चेतनता के मूलभूत श्रेष्ठतम स्वभाव को संस्कारगत परिवेश में आत्मसात करके आत्मा के स्वमान से परिष्कृत होकर पवित्र आत्मिक स्वरूप में अभिव्यक्त होती है।

महान जीवन की स्थापना का श्रेष्ठ मापदंड

जीवन की दिव्यता से कर्मयोगी व्यवहार में उपराम स्थिति द्वारा कर्मातीत अवस्था जब अव्यक्त स्वरूप में रूपांतरित होती है तब आत्मा संपूर्ण साक्षी भाव का दिग्दर्शन करती है। आत्मा के मूलभूत स्वभाव में आत्मगत स्वमान और स्वरूप का अभ्यास करने से आदि, मध्य एवं अंत के ज्ञान का सदुपयोग संपूर्ण आत्महित में सुनिश्चित होता है। रूहानी याद की यात्रा कर्मयोग के व्यावहारिक पक्ष से आत्मज्ञान की धारणा कल्याणकारी बनकर गुण एवं शक्ति के आधार से परमसत्ता के साथ पवित्रता को प्राप्त करती है। देवात्मा के चित्त एवं चरित्र की गाथा का स्थायित्व स्वयं की स्थिति को बहुमूल्य बनाता है, जिसमें श्रेष्ठता का निर्माण सहज ही आत्म तत्व द्वारा स्वीकृत हो जाता है। अलौकिक शक्तियों तथा गुणों से सुसज्जित आत्मा साक्षी भाव की स्थिति में स्थापित होकर परमात्म शक्ति से प्रकृति के तत्वों को साकाश देकर पवित्र वातावरण का निर्माण करती है।

ज्ञानार्थ के आरंभ से सेवार्थ की संपूर्णता

सुखदाता द्वारा संपूर्ण जगत से सुख प्राप्त करने की गुणग्राही दृष्टिकोण को विकसित करना ही सर्व आत्माओं को सुख देना है, जिसमें आत्म एवं परमात्म संबंधों की सूक्ष्मता विद्यमान रहती है। आत्मज्ञान का बोध व्यावहारिक पृष्ठभूमि में जीवन की विराटता है जो अनुभूति जगत को सरल बनाता है और आत्मा की सर्वगुण संपन्नता नैसर्गिक संपूर्णता को प्रतिपादित करती है। स्वयं के जीवन में सुखदेव बनने की प्रक्रिया संपन्न होना स्व के साथ संबंध और संपूर्ण सुख के मूलभूत स्रोत से सुख प्राप्ति ही आत्मज्ञान को आत्मसात करना है। आत्मज्ञान की सत्यता आत्म स्वाभिमान का व्यक्त स्वरूप है जिसमें कर्म दर्शन सर्व के लिए नियम और संयम का प्रारूप बनकर सेवार्थ के भाव जगत में परिणीत होता है। जीवन में ज्ञान प्राप्ति का अधिकार एवं सेवा की कर्तव्य-परायणता, अधिकारी स्वरूप में अनुभवी बनाती है जिसके सानिध्य में सेवार्थ की संपूर्णता का परिदृश्य स्वतः ही निर्मित हो जाता है।

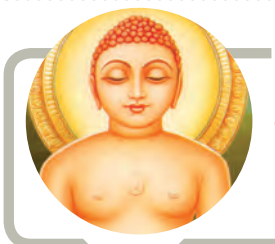

अहिंसा सबसे बड़ा धर्म है। दूसरों के दुःखों को देखकर दुःखी होना और उनके दर्द दूर करने का प्रयत्न करना अहिंसा है।

महावीर स्वामी, संस्थापक, जैन धर्म

अपने आत्मबल को जगाने वाला, खुद को पहचानने वाला और मानव जाति के कल्याण की सोच रखने वाला, पूरे विश्व पर राज्य कर सकता है।

छत्रपति शिवाजी महाराज

सोचना कैसे है, यह मूलमंत्र ब्रह्माकुमारीज़ में मिलता है

सोनाली निकम
टीवी एक्ट्रेस

बॉलीवुड एवं टीवी एक्ट्रेस सोनाली निकम ने शिव आमंत्रण से साझा किए अपने जीवन से जुड़े अनुभव

» शिव आमंत्रण, आबू रोड। हमारी सोसायटी में धर्म को लेकर बहुत सी चीजों में कन्फ्यूजन की स्थिति है। इसलिए मेरे मन में भी धर्म, व्रत आदि को लेकर कई सवाल रहते थे कि क्या सही है और क्या करना चाहिए। एक दिन अचानक चैनल सर्च करते-करते आस्था लग गया और उस समय शिवानी दीदी की स्पीच चल रही थी। दीदी के कुछ शब्द सुनते ही पूरी क्लास सुनने का मन हुआ और उस दिन वह क्लास इतनी अच्छी लगी कि रोज दीदी की क्लास सुनने लगी और बहुत अच्छा लगने लगा। इस तरह मेरी लाइफ में बदलाव आने शुरू हो गए। मन शांत होने से खुश रहने लगी। जीवन से जुड़े कई अनुभव शिव आमंत्रण से विशेष बातचीत में बॉलीवुड एवं टीवी एक्ट्रेस सोनाली निकम ने सांझा किए। टीवी एक्ट्रेस सोनाली ने कई सारे फेमस सीरियल 'गोदभराई', 'एक विवाह ऐसा भी', 'गीत हुई सबसे प्यारी' आदि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

उन्होंने कहा कि पहले मुझे भक्ति में बहुत विश्वास था। जब मैं कॉलेज में थी तो एक दिन सांई बाबा का उपवास रखा। उस दिन जब मैं कॉलेज से घर आई तो मेरी मां मुझे भूखा देखकर काफी दुखी थीं। उन्हें इस तरह दुःखी देखकर मेरे मन में संकल्प आया कि जब मेरे उपवास से मेरी मां ही खुश नहीं हैं तो भगवान कैसे खुश हो सकते हैं? हम भी तो उनके बच्चे हैं। तब मुझे लगा कि कहीं न कहीं कुछ कमी है। क्योंकि मैं कोई कार्य अपनी मां को दुखी करने के लिए नहीं करना चाहती थी। इसलिए उस दिन से मैंने उपवास छोड़ दिया। दीदी की क्लास से मुझे प्रेरणा मिली और सीखा कि हमें उपवास अन्न का नहीं अपने मन में चलने वाले बुरे विचारों, नकारात्मक विचारों, अपनी गलत आदतों का करना है। फिर मैंने सप्ताह में एक दिन, एक संकल्प लेकर जो छोटी-छोटी चीजें तकलीफ दे रही थीं उन पर ध्यान देना शुरू किया। अपनी कोई एक आदत बदलने के संकल्प से विचारों का उपवास शुरू कर दिया। धीरे-धीरे मुझमें परिवर्तन आने लगा। पहले मुझे बहुत गुस्सा आता था लेकिन राजयोग मेडिटेशन की प्रैक्टिस से आज न के बराबर आता है। ज्यादातर समय खुश ही रहती हूं।

यहां दिया जाता है सोचने की कला का ज्ञान

उन्होंने कहा कि हमें बचपन से घर में सबकुछ सिखाया जाता है कि ऐसे बैठना है, ऐसे चलना-फिरना और व्यवहार करना है। लेकिन यह नहीं सिखाया जाता है कि सोचना कैसे है। यह सोचने की कला और खुद के बारे में गहराई से जानने की कला ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान में सिखाई जाती है। यदि मेरी भावना मेरे प्रति अच्छी है, शुभ है तो हमें बोलने पर ध्यान ही नहीं देना है, वह स्वाभाविक रूप से दूसरों के लिए भी अच्छी ही होगी। यहां के आध्यात्मिक ज्ञान से सबसे महत्वपूर्ण हमें अपने मन, विचार की शक्ति का ज्ञान होता है। राजयोग मेडिटेशन से हम यह जान जाते हैं कि विचारों को श्रेष्ठ, शक्तिशाली और सकारात्मक कैसे बनाना है।

अब खुद ही निकाल लेते हैं समस्या का समाधान

पहले मैं छोटी-छोटी बातों के समाधान के लिए दूसरों के पास सलाह लेने के लिए जाती थी लेकिन अब इस आध्यात्मिक ज्ञान को मिलने के बाद खुद ही इन समस्याओं का समाधान निकाल लेती हूं। मेरी समस्या है तो मैं ही ठीक कर सकती हूं। परमात्मा शिव बाबा की मदद से हर समस्या का समाधान निकाला जा सकता है।

माउंट आबू आकर दिव्य अनुभूति हुई

जैसे ही मैंने माउंट आबू, पांडव भवन की भूमि पर कदम रखा तो मुझे यहां आकर दिव्य अनुभूति हुई। मेरा मन अद्भुत शांति की शक्ति से भर गया। ऐसा लगा कि लाइफ में सबकुछ पा लिया है। जिस अतीन्द्रिय शांति की मुझे तलाश थी वह आज मिल गई है। ब्रह्माकुमारीज बहनों बिना किसी नाम-मान-शान की भावना के निःस्वार्थ रूप से सेवा कर रही हैं। उनके जीवन में दिव्यता, पवित्रता देखकर बहुत खुशी होती है। उनके जीवन से सीखा है कि इस दुनिया में आप अपना बेस्ट देते जाइए और बाकी सब परमात्मा पर छोड़ दीजिए। मैंने यहां जाना है कि हमें अपनी चीजों को कैसे संभालना है।

राजयोग मेडिटेशन से बढ़ी इनर सेल्फ पॉवर

जब मैं राजयोग मेडिटेशन का नियमित प्रैक्टिस करने लगी तो इससे मेरी इनर पॉवर बढ़ गई है। मैंने अनुभव किया है कि जितना हम स्प्रीचुअलिटी को जानते जाते हैं और इनर सेल्फ पर ध्यान देते हैं तो हमारी पर्सनॉलिटी इम्प्रूव होती जाती है। खुद को समझने के बाद हमें दूसरों को समझने की कला भी आ जाती है। मेरा आप सभी से भी आग्रह है कि अपनी रुटीन लाइफ में से कुछ समय स्प्रीचुअलिटी के लिए भी निकालें। इसे लाइफ में इम्पलीमेंट करें। आप किसी भी प्रोफेशनल में हैं यदि अपने इनर पॉवर पर फोकस करते हैं तो आप उसमें बेस्ट दे सकते हैं। लाइफ को बैलेंस करने में मेडिटेशन बहुत हेल्प करता है। युवा स्प्रीचुअलिटी से जुड़ते हैं तो उन्हें लाइफ में एक नई दिशा मिल जाती है। वह अपनी लाइफ को चैंज कर सकते हैं।

ध्यान से दिन की शुरुआत

अब रोजाना की सुबह राजयोग मेडिटेशन के अभ्यास से होती है। कितनी भी बिजी रहूं लेकिन इसकी प्रैक्टिस नहीं भूलती हूं। दिन में शूटिंग के दौरान भी बीच-बीच में प्रैक्टिस करती रहती हूं। इससे माइंड को पॉवर मिलती है और परमात्मा की शक्ति का एहसास होता है। इसी का नतीजा है कि अब मेरी वर्क पॉवर बढ़ गई है। मेडिटेशन में परमात्मा की शक्तियों को महसूस किया जा सकता है। भगवान को प्यार से याद करना, उनसे बातें करना, अपने मन की बात उन्हें बताना ही मेडिटेशन है। वास्तव में हमारा खुद का एक रिश्ता परमात्मा के साथ बनाना ही मेडिटेशन है।

आध्यात्म की ओर बढ़ते सितारे

मेडिटेशन एक विज्ञान है

ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्यालय माउंट आबू आकर बहुत ही शांति की अनुभूति हुई है। आज की दुनिया में ऐसे लोगों की और ऐसी संस्थाओं की बहुत ही जरूरत है। मेडिटेशन से हम जो भी काम करते हैं तो स्थिर मन से करते हैं। मेडिटेशन से हम दो मिनट खुद पर फोकस करके खुद को शांत और स्थिर कर सकती हूं। सभी के लिए मेडिटेशन बहुत जरूरी है। मेडिटेशन एक साइंस है। जिसे सही तरीके से समझने की जरूरत है। हम अपनी जिंदगी में कितने भी व्यस्त हूं लेकिन रोज कम से कम 5-10 मिनट रोजाना मेडिटेशन के लिए जरूर निकालें। इसका असर निश्चित रूप से आपके काम पर दिखेगा। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान लोगों को सही राह दिखाने के लिए कार्य कर रही है। जीवन में सही मार्ग मिल रहा है। यह सब कार्य भगवान ही करा सकते हैं। भगवान की शक्ति से ही यहां की बहनें इतना सब कार्य कर पा रही हैं। यहां भगवान की ही शक्ति है जो विश्व स्तर पर लोगों को आध्यात्म की शिक्षा दी जा रही है। हमारे देश में महिलाओं की पूजा देवी के रूप में होती आ रही है। चाहे मां दुर्गा हों, मां काली हों, मां सीता हों... इसी तरह हमारे देश की नारियों में भी वह शक्तियां हैं जिसे पहचानने की जरूरत है। ब्रह्माकुमारी बहनों ने अपनी शक्ति को पहचाना है और उसे सही दिशा में लगा रही हैं।

रवीना टंडन
मशहूर फिल्म अभिनेत्री, मुंबई

बाबा ने मेरा जीवन बदला

राजयोग मेडिटेशन से मेरी जिंदगी बदल गई। वास्तव में राजयोग मेडिटेशन सभी के लिए सीखना चाहिए। इससे व्यक्तित्व का पुनःनिर्माण होता है। लोगों को आध्यात्म का संदेश देने के लिए जिंदल ग्रुप के सभी स्कूलों, हॉस्पिटल और कंपनियों में भी समय-समय पर मोटिवेशनल वर्कशॉप, सेमीनार, आध्यात्मिक प्रवचन और राजयोग मेडिटेशन की शिक्षा ब्रह्माकुमारी बहनों के माध्यम से दी जाती है। मैं खुद को भाग्यशाली समझती हूं कि मुझे परमपिता परमात्मा का सत्य ज्ञान मिला। शिव बाबा ने मेरा जीवन बदल दिया। वर्तमान परिवेश में आज यह ज्ञान सभी को जानना चाहिए। इससे जीवन जीने की कला आती है। ब्रह्माकुमारीज़ को लेकर लोगों के मन में कई तरह के भ्रम हैं जो गलत हैं। इनका पवित्र और तपस्वी जीवन मिसाल है जो हमें प्रेरणा देता है।

दीपिका जिंदल
डायरेक्टर, जिंदल ग्रुप ऑफ स्कूल व हॉस्पिटल, दिल्ली

दादी जानकी: द्वितीय पुण्य स्मरण] तपस्या का तप है कि योग के प्रकम्पन्नों को आज भी शक्ति स्तंभ पर महसूस कर सकते हैं

राजयोगिनी दादी जानकी

दादी के जीवन के तीन मंत्र- सच्चाई, सफाई और सादगी

भगवान कहते हैं- मेरे बच्चों तुम कोई भी फिक्र मत करो, सिर्फ मुझे याद करो, मैं तुम्हारे सारे कार्य आसान कर दूंगा। खुशी सबसे बड़ा गहना है, सदा खुशी में नाचते रहो। खुशी जीवन का शृंगार है।

शिव आमंत्रण, आबू रोड। विश्वभर को सच्चाई, सफाई और सादगी का संदेश देने वालीं योग शक्ति राजयोगिनी दादी जानकी जी की तपस्या का ही कमाल है कि उनके योग के प्रकम्पन्नों को आज भी महसूस किया जाता है। दादी की याद में बने शक्ति स्तंभ पर पहुंचते ही मन योग में रम जाता है। दादी की कथनी और करनी एक समान थी। यही कारण है कि उन्होंने ताउम्र अपने जीवन के मूलमंत्र- सच्चाई, सफाई और सादगी को प्रत्येक पल जीया। हृदय इतना विशाल की 50 हजार ब्रह्माकुमारी बहनों की मार्गदर्शिका और पांच हजार से अधिक सेवाकेंद्रों की निदेशिका होने के बाद भी कहती थीं कि मेरा जेब खाली और मैं विश्व का मालिक। दादीजी 27 मार्च 2020 को 104 वर्ष की उम्र में स्थूल देह का त्याग कर अव्यक्त वतन वासी हो गईं थीं, द्वितीय पुण्य स्मरण पर विशेष...

बचपन से ही थे भक्तिभाव के संस्कार

अविभाज्य भारत के हैदराबाद सिंध प्रांत में वर्ष 1916 में जन्मी दादी जानकी ने मात्र चौथी कक्षा तक ही पढ़ाई की थी। भक्ति भाव के संस्कार बचपन से ही मां-बाप से विरासत में मिले। उन्होंने लोगों को दुःख, दर्द, तकलीफ, जातिवाद और धर्म के बंधन में बंधे देख अल्पायु में ही समाज परिवर्तन का दृढ़ संकल्प किया। माता-पिता की सहमति से 21 वर्ष की आयु में आप ओम् मंडली (ब्रह्माकुमारीज़ का पहले यही नाम था) से जुड़ गईं। ब्रह्मा बाबा के सान्निध्य में 14 वर्ष तक गुप्त तपस्या की।

37 देशों में किया आध्यात्म का शंखनाद

दादी पहली बार 60 साल की आयु में वर्ष 1970 में विदेशी जमीं पर मानवीय मूल्यों और आध्यात्मिकता का बीज रोपने के लिए निकलीं। सबसे पहले लंदन से आध्यात्म का बीजारोपण किया। यहां 1991 में कई एकड़ क्षेत्र में फैले ग्लोबल को-ऑपरेशन हाऊस की स्थापना की। कारवां बढ़ता गया और यूरोप के देशों में आध्यात्म का शंखनाद हुआ। दादी ने अकेले ही 100 से अधिक देशों में आध्यात्म का संदेश पहुंचाया। उन्होंने वर्ष 1970 से 2007 तक 37 वर्ष विदेश में अपनी सेवाएं दीं। वर्ष 2007 में संस्था की तत्कालीन मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि के अव्यक्त होने के बाद 27 अगस्त 2007 को ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका बनकर अंतिम सांस तक ईश्वरीय सेवा की।

प्रधानमंत्री ने बनाया था स्वच्छता का ब्रांड एंबेसेडर

देश में स्वच्छता को बढ़ावा देने के लिए भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने दादी जानकी को स्वच्छ भारत मिशन का ब्रांड एंबेसेडर भी नियुक्त किया था। दादी के नेतृत्व में पूरे भारतवर्ष में विशेष स्वच्छता अभियान भी चलाए गए। इसके अलावा दादी को देश-विदेश में मानव मात्र की सेवाओं के लिए कई राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय अवार्ड से भी नवाजा गया। मूल्यनिष्ठ शिक्षा एवं आध्यात्मिकता में विश्वभर में सराहनीय योगदान देने पर दादीजी को वर्ष 2012 में गीतम विश्वविद्यालय, विशाखापट्नम ने डॉक्टरेट की उपाधि से सम्मानित किया। आध्यात्मिक एवं धार्मिक लोगों के एक संगठन कीपर्स ऑफ विजडम की दादी जी सदस्य भी थीं। विश्व स्तर पर मानव आवास एवं पर्यावरण की समस्याओं के समाधान के लिए यह संगठन कार्य करता है। दादी के सम्मान में वर्ष 1977 में लंदन में जानकी फाउंडेशन फॉर ग्लोबल हेल्थकेयर की स्थापना की गई।

विश्व की सबसे स्थिर मन की महिला का खिताब मिला था

दादी जानकी दुनिया की पहली ऐसी महिला थीं, जिन्हें सबसे स्थिर मन की महिला का खिताब मिला

था। अमेरिका के टेक्सास मेडिकल एवं साइंस इंस्टीट्यूट में वैज्ञानिकों द्वारा परीक्षण के बाद दादीजी को मोस्ट स्टेबल माइंड ऑफ द वर्ल्ड वुमन से नवाजा था। उन्होंने योग से अपने को मन इतना संयमित, पवित्र, शुद्ध और सकारात्मक बना लिया था कि वह जिस समय चाहें, जिस विचार या संकल्प पर और जितनी देर चाहें, स्थिर रह सकती थीं।

दादीजी ने पहले ही कर ली थी जाने की तैयारी

दादीजी के साथ लंदन में रहीं और 35 साल तक निज सचिव के रूप में सेवाएं देने वालीं वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके हंसा ने बताया कि दादीजी ने पहले से ही अपने शरीर छोड़ने की प्लानिंग कर ली थी। कई बार इसका जिक्र करती थीं कि वे चाहती हैं कि उनके शरीर छोड़ने के समय न तो कोई मेडिकल मशीनरी लगी हो और न ही किसी हास्पिटल में रहें। दादी जब 27 मार्च को इस दुनिया से विदा हुईं तो बिल्कुल वही स्थिति थी। दादी की इच्छा थी कि जब वे शरीर छोड़े तो ज्यादा तामझाम या ज्यादा खर्च या लोग इक्कट्ठे ना हों। यह बात वह कई बार सार्वजनिक रूप में भी करती थीं। वैसे, उनकी तबियत 17 मार्च को ही अहमदाबाद में ज्यादा खराब हो गई। वहां से चिकित्सक छुट्टी नहीं दे रहे थे कि वे माउंट आबू लेकर आएं, लेकिन दादी का भाव और विचार था कि जल्दी माउंट आबू ले चलो। 18 मार्च को हम आबू आ गए। यहां एक बारगी लगा कि दादी ठीक हो जाएंगी। उनके सपोर्टिंग सिस्टम को हटा दिया गया। केवल कभी-कभी ऑक्सीजन दी जाती थी। ऐसे में लगने लगा कि दादी अब पूरी तरह ठीक हो जाएंगी। शरीर छोड़ने के पहले मुझसे हाथ मिलाया और भाकी पहनी। यह करीब रात 10 बजे की घटना है। इसके कुछ देर बाद दादी की तबीयत खराब होने लगी। चिकित्सकों को बुलाया गया, लेकिन 27 मार्च सुबह 2 बजे वे इस दुनिया से विदा हो गईं।

दादी जी के जीवन 10 अनमोल शिक्षाएं

01 प्रभु से इतना प्यार है कि उसे अपने दिल में बैठा रखा है। उसे हरदम अपने दिल-जिगर के पास महसूस करती हूं। जब आंख खोलती हूं तो बाबा की दृष्टि पड़ती, उन्हें अपनी आंखों से निहारती हूं। परमात्मा से अन्नय प्रेम ही जीवन का सार है।

02 मेरे दो बच्चे हैं- सुख और शांति। मेरा पति दिलवाला (परमपिता शिव परमात्मा) है। अब मेरा तीसरा बच्चा है प्रेम। जीवन का आधार सुख-शांति और प्रेम है।

03 मेरा सफेद कपड़ा, जेब खाली और सारे विश्व की मालिक हूं। मैंने कभी जीवन में अपने साथ पर्स नहीं रखा। कभी भी एक रुपए की फिक्र नहीं रही। करनकरावनहार परमात्मा शिव बाबा सब करा लेता है। जब सबकुछ उसे अर्पण कर देते हैं तो फिर सारी जिम्मेवारी प्रभु पिता की हो जाती है।

04 जीवन में सच्चाई है तो खुशी मिलेगी, खुशी से प्रेम और प्रेम से नम्रता-मधुरता।

05 जीवन में सदा ओके रहना, चाहे लाख परेशानियां आएं, अपने मन की स्थिति कभी बिगड़ने नहीं देना।

06 सारे संसार में कोई बात मुश्किल नहीं है। परमात्मा पिता पर विश्वास हो तो सब आसान है। ब्रह्माकुमारी बहनें जो संकल्प करती हैं वह पूरा हो जाता है क्योंकि सब कार्य परमात्मा शिव बाबा कराते हैं। करनकरावनहार तो बाबा है।

07 भगवान कहते हैं- मेरे बच्चों तुम कोई भी फिक्र मत करो, सिर्फ मुझे याद करो मैं तुम्हारे सारे कार्य आसान कर दूंगा। खुशी सबसे बड़ा गहना है, सदा खुशी में नाचते रहो।

08 दुनिया में प्रत्येक व्यक्ति महत्वपूर्ण है। जब हम मिलकर कोई कर्म करते हैं तो वह आसान हो जाता है और सफल होता है।

09 जीवन में सच्चाई से चलेंगे तो सुख मिलेगा। त्याग-तपस्यामूर्त बनेंगे तो ही आत्मा का विकास होगा। धीरज रखो, शांति से रहो।

10 पांच बातें हर एक के दिल में छपी हों- पवित्रता, सत्यता, धैर्यता, नम्रता, मधुरता।

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी: प्रथम पुण्य स्मरण विशेष] 11 मार्च 2021 को महाप्रयाण कर अव्यक्त वतनवासी हो गईं थीं दादी

जिनका जीवन दिव्य गुणों के गुलदस्ते की तरह था 'गुलजार'

» शिव आमंत्रण, आबू रोड। जिनकी आंखों में परमात्म प्यार की चमक, चेहरे पर दिव्य मुस्कान, रुहानियत से लबरेज व्यक्तित्व, सादगी की मूरत और दिव्य गुणों रूपी गुलदस्ते की तरह जिनका जीवन गुलजार था। ऐसी दिव्य आभा और दिव्य दृष्टि के वरदान से संपन्न थीं राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी (गुलजार दादी)। 11 मार्च 2021 को इस दैहिक लोक से महाप्रयाण कर अव्यक्तवासी हो गईं थीं। 92 वर्ष की आयु में आपको वर्ष 2020 में ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका नियुक्त किया गया था। दादीजी की स्मृति और उनकी शिक्षाओं को याद दिलाने और उन्हें संजोकर रखने के लिए शांतिवन परिसर में स्मृति स्तंभ अव्यक्त लोक का निर्माण कार्य जारी है। गुलजार दादी के प्रथम पुण्य स्मरण पर उनके जीवन से जुड़े अनछुए पहलू , प्रेरणाएं और शिक्षाओं को लेकर विशेष....

बचपन में ध्यान में होती थीं दिव्य अनुभूतियां-

दादी हृदयमोहिनी ने मात्र चौथी कक्षा तक ही पढ़ाई की थी। लेकिन तीक्ष्ण बुद्धि होने से आप जब भी ध्यान में बैठतीं तो शुरुआत के समय से ही दिव्य अनुभूतियां होने लगीं। यहां तक कि आपको कई बार ध्यान के दौरान दिव्य आत्माओं के साक्षात्कार हुए, जिनका जिक्र उन्होंने ध्यान के बाद ब्रह्मा बाबा और अपनी साथी बहनों से भी किया। दादी की सबसे बड़ी विशेषता थी उनका गंभीर व्यक्तित्व। बचपन में जहां अन्य बच्चे स्कूल में शरारतें करते और खेल-कूद में दिलचस्पी के साथ भाग लेते थे, वहीं आप गहन चिंतन की मुद्रा में रहतीं थीं।

संपर्क में आने वालों को होती थी दिव्यता की महसूसता-

जब आप मात्र 9 वर्ष की थीं तब से आपको दिव्य लोक की अनुभूति होने लगी। इसके बाद से वह जीवन की अंतिम यात्रा तक ज्यादातर समय ध्यान मग्न ही रहती थीं। दादी का पूरा जीवन सादगी, सरलता और सौम्यता की मिसाल रहा। बचपन से ही विशेष योग-साधना के चलते दादी का व्यक्तित्व इतना दिव्य हो गया था कि उनके संपर्क में आने वाले लोगों को उनकी तपस्या और साधना की अनुभूति होती थी। उनके चेहरे पर तेज का आभामंडल उनकी तपस्या की कहानी साफ बयां करता था। एक साक्षात्कार के दौरान दादी ने बताया था कि जब वह 9 वर्ष की थीं और अपने मामा के यहां गईं थीं, तभी उनके घर ब्रह्मा बाबा का आना हुआ। यहां बाबा से उन्हें दिव्य साक्षात्कार हुआ था। बाबा हम बच्चों का इतना ख्याल रखते थे कि खुद अपने हाथ से दूध में काजू-बादाम डालकर खिलाते थे। बाबा का प्यार, स्नेह इतना मिला कि कभी भी लौकिक मां-बाप की याद नहीं आई।

1969 से 2016 तक कराया परमात्म मिलन-

18 जनवरी 1969 में संस्थापक ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त होने के बाद परमात्म आदेशानुसार दादी ने परमात्म संदेशवाहक और दूत बनकर लोगों के लिए आध्यात्मिक ज्ञान और दिव्य प्रेरणा देने की भूमिका निभाई। दादीजी ने 2016 तक परमात्मा का दिव्य संदेश देकर लाखों भाई-बहनों को योग-तपस्या बढ़ाने के लिए प्रेरित किया। एक बार चर्चा के दौरान दादीजी ने बताया था कि जब मैं मन की शक्ति से वतन में जाती हूं तो आत्मा तो शरीर में रहती है लेकिन मुझे इस शरीर का भान नहीं रहता है।

8 साल की उम्र में संस्था से जुड़ी-

दादी के बचपन का नाम शोभा था। आपका जन्म वर्ष 1928 में करांची में हुआ था। आप जब 8 वर्ष की थी तब संस्था के साकार संस्थापक ब्रह्मा बाबा द्वारा खोले गए ओम निवास बोर्डिंग स्कूल में दाखिला लिया। यहां आपने चौथी कक्षा तक पढ़ाई की। स्कूल में बाबा और मम्मा (संस्थान की प्रथम मुख्य प्रशासिका) के स्नेह, प्यार और दुलार से प्रभावित होकर अपना जीवन उनके समान बनाने की निश्चय किया। आपकी लौकिक मां भक्ति भाव से परिपूर्ण थीं।

मन हो जाता शक्तिशाली

दादी का इलाज करने वाले डॉक्टर कहते थे कि जैसे ही दादीजी के रूम में जाते थे तो मन को शक्तिशाली फीलिंग होती थी। बीमारी के बाद भी दादीजी के चेहरे पर कभी दर्द, दुःख या उदासी की फीलिंग नहीं देखी। दादीजी के साथ के अनुभव को शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता है। उन दिव्य अनुभूतियों को सिर्फ अनुभव ही किया जा सकता है। हमारे जीवन का दादीजी एकमात्र ऐसी मरीज थीं जिन्होंने यह कभी नहीं कहा कि मुझे यह तकलीफ है।

दादी जी के जीवन की 10 अनमोल शिक्षाएं

01 जो भगवान से संबंध जोड़ते हैं वह भाग्यवान बन जाते हैं। परमात्मा का साथ जीवन की ज्योति जगा देता है, जिससे दुःखों का अंधकार समाप्त हो जाता है। भगवान का बच्चा होने का अर्थ है, उनकी विशेषताओं को स्वयं में प्रत्यक्ष करना।

02 जब आपको गर्मी होती है तो पंखे से हवा मांगते नहीं हैं, आप उसके सामने बैठ जाते हैं और हवा अपने आप आपको मिल जाती है, उसी प्रकार परमात्मा के सामने बैठ उसे हम दिल से याद करें तो परमात्मा की सारी शक्तियां आपको स्वतः मिल जाएंगी, आपको मांगने की जरूरत नहीं।

03 समर्थन और विरोध केवल विचारों का होना चाहिए, किसी व्यक्ति का नहीं। क्योंकि अच्छा व्यक्ति भी गलत विचार रख सकता है और किसी बुरे व्यक्ति का भी विचार सही हो सकता है।

04 किसी चीज को समझने के लिए ज्ञान की आवश्यकता होती है, किन्तु उसे महसूस करने के लिए अनुभव की आवश्यकता होती हैं। जीवन में प्रसन्न व्यक्ति वह है जो स्वयं का मूल्यांकन करता है, जो दूसरों का मूल्यांकन करता है वह दुःखी रहता है।

05 चित्र बनाना जितना आसान है चरित्र बनाना उतना ही मुश्किल। जब कोई गुण दिखाई दे तो अपने मन को कैमरा बना लीजिए और कहीं अवगुण दिखाई दें तो अपने मन को आइना बना लीजिए।

06 मन की बीमारी से बचना चाहते हैं इसके लिए गीता में ईश्वर के महावाक्य हैं कि मन को मेरी याद में लगा दो अर्थात् "मनमनाभव" हो जाओ। जो अपने मन से शुभ भावनाओं का दान करते रहते हैं, वह हर प्रकार की मानसिक बीमारी से सदा मुक्त रहते हैं।

07 किसी के साथ रिश्ता बनाना हो तो उसके लिए समय निकालना पड़ता है उससे प्यार करना पड़ता है तब जाकर रिश्ता बनता है। फिर हमने कैसे सोच लिया कि मंदिर गए, घंटी बजाई, प्रसाद लिया और चलो... भगवान से रिश्ता बन गया, नहीं उससे रिश्ता बनाना है तो उस परमात्मा के लिए समय निकालना पड़ेगा, उसे याद करना पड़ेगा, उससे प्यार करना पड़ेगा, तब जाकर भगवान के साथ रिश्ता बनेगा।

08 नम्र बनो तो लोग नमन करते हुए सहयोग देंगे। दो ही चीजें ऐसी हैं, जिसमें किसी का कुछ नहीं जाता- मुस्कुराहट व दुआ। हमेशा बांटते रहें, जो व्यक्ति किसी दूसरे के चेहरे पर हंसी और जीवन में खुशी लाने की क्षमता रखता है, ईश्वर उसके चेहरे से कभी हंसी और जीवन से खुशी कम नहीं होने देता।

09 परीक्षा के समय पेपर में शिक्षक थोड़ी ही मदद करता है। उस समय तो पेपर चेक करने वाला हो जाता है। इसलिए बाबा कहते हमेशा एवररेडी रहो। बच्चों का सोचना और करना दोनों ही समान हो, जो सोचा वह किया। अपने को सदा चेक करते रहना कि मेरी अवस्था क्या है?

10 अभी समय कम है इसीलिए अपनी कमियों को समझकर निकालो। हमारी स्थिति अच्छी होगी तो सेवा पीछे-पीछे आएगी। वाणी की सेवा नहीं भी हुई तो मन्सा तो मैं करूंगी। जो कहते हैं मेरा शरीर नहीं चलता, मैं सेवा नहीं कर सकती। लेकिन मन्सा सेवा तो अंत तक कर सकते हैं। अगर मन ठीक है तो दिमाग ठीक काम करता है तो मन्सा सेवा कर सकते हैं।

ज्यादातर मौन रहती थीं दादी-

दादी ने 14 वर्ष तक बाबा के सानिध्य में रहकर कठिन योग-साधना की। इन वर्षों में खाने-पीने को छोड़कर दिन-रात योग साधना में वह लगी रहती थीं। बाबा एक-एक सप्ताह का मौन कराते थे। तभी से दादी का स्वभाव बन गया था कि जितना काम हो उतना ही बात करती थीं। अंत समय तक वह मौन में रहीं। 23 मार्च 2020 में संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका 104 वर्षीय राजयोगिनी दादी जानकी जी के अव्यक्त होने के बाद आपको संस्थान की मुख्य प्रशासिका नियुक्त किया गया था। अस्वस्थ होने के बाद भी आपको दिन-रात लोगों का कल्याण करने की भावना लगी रहती थी। दादीजी मुंबई से ही संस्थान की गतिविधियों का समाचार लेतीं और समय प्रति समय निर्देशन देतीं। दादी को नॉर्थ उड़ीसा विश्वविद्यालय, बारीपाड़ा ने डी. लिट (डॉक्टर ऑफ लिटरेचर) की उपाधि से विभूषित किया था।

"विश्व महाराजन् की पदवी लेने के लिए विश्व के सहयोगी बनो!"

श्रेष्ठ विचारों से बनेगी सुंदर पर्सनॉलिटी

विचारों की स्पीड जितनी कम होगी माइंड की शक्ति उतनी ही बढ़ेगी

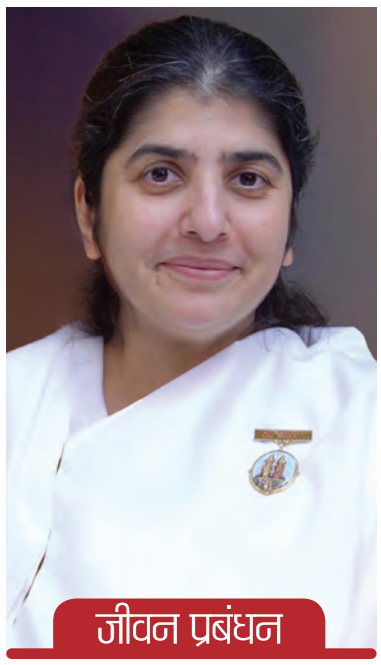

जीवन प्रबंधन

बी.के. शिवानी
जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ, अंतरराष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर और ब्रह्माकुमारीज़ की टीवी ऑइकॉन गुरुग्राम, हरियाणा

शिव आमंत्रण, आबू रोड । हम जब फास्ट बोलते हैं और जोर से बोलते हैं, उसका कारण यह है कि हम ज्यादा सोचते हैं मतलब हमारी थॉट्स बहुत फास्ट चलती है। जब हमारी थॉट्स बहुत फास्ट चलती हैं न तो हमारे वर्ड्स भी बहुत जल्दी-जल्दी निकलते हैं। जैसे यहां जब ज्यादा क्रियेट होगा तो वही ज्यादा मुख से निकलेगा। यहां जब हंड्रेड वर्ड तैयार होंगे तो मुख से उतने ही वर्ड बाहर आएंगे। अगर यहां सब ठीक हो गया और इसकी स्पीड कम हो गई तो वर्ड्स निकलने वाले अपने आप स्लो हो जाएंगे। कभी भी वर्ड्स पर कुछ करना ही नहीं होता। अगर हमारा चलने का तरीका, बात करने का तरीका, जैसे हम कई बार बोलते हैं न कि हमारी पर्सनॉलटी कैसी होती है। हमारा उठना, बैठना, चलना, मूव करना, सबकुछ, अगर आप साइकिल चलाते हैं तो आपके साइकिल चलाने का तरीका। जैसे मैं कार चलाती थी तो मैं बहुत फास्ट चलाती थी। फास्ट मतलब जितनी चाहिए उससे फास्ट चलाती थी और जैसे मैंने रियलाइज किया कि फास्ट चलाना मतलब मेरा माइंड फास्ट चल रहा है। जैसे ही यहां चेंज आने लगा वो कार चलाने का तरीका अपने आप चैंज हो गया।

बीज (विचार) की क्वालिटी सुधारना होगी

हमारा जो बाहर के बिहेवियर होते हैं, जो बाहर की पर्सनॉलिटी होती है, जनरली हम उसको देखते हैं। लेकिन हकीकत में वह हमारे बाहर के पौधे होते हैं। बाहरी पौधा दिखता है न, बीज नहीं दिखता है। बीज नीचे होता है जो नहीं दिखता, प्लांट दिखता है। ऐसे ही हमारा बाहरी बिहेवियर दिखता है। सबको दिखता है, हमको भी दिखता है। अगर हम सिर्फ प्लांट को ठीक करना चाहें तो पूरा प्लांट नहीं ठीक हो सकता। आपको बीज की क्वालिटी अच्छी डालनी है। आपको बीज को रोज पानी डालना है। अगर आप पौधे के हर एक पत्ती को पानी से धोएं तो क्या पौधे में ग्रोथ होगा, नहीं न। तो हमें पानी सीड को देना है, जड़ को पानी देना है।

शुभ संकल्पों के बीज को रोज देना होगा पानी-

ऐसा नहीं कि बीज बोया और छोड़ दिया। फिर तो कौन सा प्लांट निकलेगा उसमें से। लेकिन उस बीज को रोज पानी भी देना होता है। लेकिन अब सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि जो-जो भी लिस्ट आपने अभी बनाई, चार्ट में लिखा, अब उस लाइन को थोड़ा सा चैंज करते हैं। आपको करना यह है अपनी डायरी में लिखना है। उदाहरण के लिए अगर आपने लिखा- मैं सकारात्मक रहना चाहता हूं, मैं शांतिपूर्ण रहना चाहता हूं। अब उसको सिर्फ चैंज करके नोट कीजिए- मैं सकारात्मक हूं। भले आप नहीं हैं अभी लेकिन आप लिखेंगे- मैं सकारात्मक हूं। अगर किसी ने लिखा- मैं खुश रहना चाहता हूं, उसको चैंज करके लिखेंगे- मैं बहुत खुश हूं। मतलब मैं यह करना चाहता हूं इसे मैं ऐसा शुभ संकल्प हूं में चैंज कर दीजिए। यह बहुत बड़ी पावर है। हमें इस पावर को यूज करना है। यह हमारे लाइफ में मैजिक क्रियेट करती है। बहुत बड़ी मैजिक है आई एम वाली।

पौधे की जड़ अर्थात् मन व आत्मा पर ध्यान देना होगा

हमने सोचा कि अरे ये पौधा तो मुरझा रहा है। पानी लाकर एक-एक पत्ते को धोया तो भी सभी पौधे मुरझा जाएंगे। हमें पौधे के जड़ में पानी देना है। इसी तरह हम अपनी पर्सनॉलिटी, बिहेवियर, बात करने के तरीके, पढ़ने के तरीके में परिवर्तन लाना चाहते हैं। लेकिन हम उसे बाहर करने की कोशिश करते हैं। उसमें से मैजारिटी चीजों का संबंध मन और आत्मा से होता है। इसलिए आज हमारा सबसे पहला लर्निंग होगा जो आपने बहुत सारे सुन्दर-सुन्दर प्लांट हमें दिखाएं, उससे यह सीख मिलती है कि हमें बीज में, जड़ में परिवर्तन लाना है। पौधे पर परिवर्तन नहीं लाया जा सकता है। पौधा तो उस बीज का रिजल्ट है।

शुभ संकल्पों रूपी बीज का पूरे शरीर पर होता है असर

आप सबने अलग-अलग क्वालिटी के बीज बोए हुए होंगे और कौन सी चीज का बीज बोया। जिस फ्रूट का, फ्लावर का आपने बीज बोया होगा तो वही निकलेगा? अगर मैंने गुस्से का बीज बो दिया, तो उसके बाद कितने फ्लावर हमारे मुख से निकलेंगे। सोचो कैसे वाले निकलेंगे। ऐसे पत्थर निकलेंगे, सबको मारेंगे। मैंने अंदर बीज ही गुस्से पाला बोया है। यदि हमने मैं शांत स्वरूप आत्मा हूं, मैं परमात्मा का बच्चा हूं, मैं सबके साथ बहुत शांत रूप से, आराम से बात करने वाली आत्मा हूं। ऐसा मैंने सिर्फ थॉट क्रिएट किया मतलब मैंने बीज बोया तो धीरे-धीरे बीज का असर पूरे प्लांट पर दिखाई देना शुरू हो जाएगा। बाहर कुछ भी नहीं करना है। फर्स्ट चैंजिंग जो हम अपने में लाना चाहते हैं वो अपने अंदर थॉट लेवल पर और अंतःकरण में करना है। बीज को शो करके हमें उसको रोज पानी देना है।

पिछले अंक से क्रमशः

अलविदा डायबिटीज

बीके डॉ. श्रीमंत कुमार
ग्लोबल हॉस्पिटल, माउंट आबू

डायबिटीज और हमारे पांव

शिव आमंत्रण, आबू रोड । हमारे पांव शरीर के एक मुख्य अंग हैं। पांव के बिना के बिना मनुष्य अपंग हो जाता है। एक मनुष्य को सारे जीवन काल में इतना चलना पड़ता है कि लगभग वह सारे विश्व का 3 बार परिक्रमा लगा देता है। परंतु क्या आप जानते हैं कि डायबिटीज़ के कारण सारे विश्व में हर 20 सेकंड में किसी न किसी एक मरीज़ अपना पैर खो रहा है अर्थात एम्प्यूटेशन किया जा रहा है। लंबे समय तक जब शुगर नियंत्रण में नहीं रहता हैं तब उसका दुष्प्रभाव स्नायु तथा रक्त नलियों पर दिखाई देता है। जब पैरों के स्नायु प्रभावित हो जाते हैं, पैरों में सूनापन अनुभव होता है। पांव से चप्पल भी निकल जाए तो पता नहीं पड़ता है। छोटा मोटा चोट लगने से भी महसूस नहीं होता है। शुगर नियंत्रण में नहीं है, घाव हो गया तो शीघ्र ही इंफेक्शन हो जाता है। बहुत इंफेक्शन हो जाने से कभी कभी अनियंत्रित होने के कारण पांव को काटना पड़ता है।

पांव में दुष्प्रभाव के लक्षण

1. पांव में सूनापन महसूस होना, चलते चलते पैरों से चप्पल निकल जाना, पिन काटा चुभने जैसा महसूस होना, आग में जलने जैसा वा आरी से काटने जैसा महसूस होना।
2. पांव से पसीना ना आना, एड़ी का फटना। पांव में गाठें हो जाना।
3. उंगलियां टेढ़ी हो जाना, नाखून के रंग में बदलाव आना,टूटने लगना। घाव हो जाना और लंबे समय तक न भरना।
4. अंगुलियों के बीच में फंगल अथवा बाईकटेरियल इन्फेक्शन हो जाना। थोड़े समय चलने के बाद पिण्डलियों में दर्द होना और रुक जाने से अथवा बैठ जाने से दर्द कम हो जाना।
5. पांव नीला पड़ जाना अथवा काला हो जाना(गेन्ग्रीन) आदि।

पांव की ऐसे करें जांच-

- डायबिटीज़ में शुगर चेक करना जितना ज़रूरी हैं, अपने पैरों का जाँच कराना उससे भी ज़्यादा महत्वपूर्ण है। नियमित रूप से स्वयं ही पांव के तलवे का, उंगलियों के बीच के हिस्सों को, एड़ियों को रोज चेक करना है। ऊपर वर्णित कोई भी लक्षण संबंधित बातें दिखाई देती है तो तुरंत ही अपने फिजीशियन से चेक कराना बहुत ज़रूरी है, तथा शीघ्र ही उपचार कराना ज़रूरी है।
- साल में एक बार फिर बायो से सिओमेट्री जांच अवश्य कराएं। इससे पैरों के स्नायु पर कितना असर हुआ है पता चलता है।
- पीडो स्कान् कराना भी सहज हैं। इससे पैरों के तलवे में कहीं प्रेसर पॉइंट है तो पता चलता है और होने वाले केलोसिटीज को रोका जा सकता है। पैरों में रक्त प्रभाव की कमी वह संदेह रहता है तो लास्कुलर से रक्त नलियों में ब्लॉकेज का पता पड़ता है।

संपर्क: बीके जगतजीत मो. 9413464808 पेशेंट रिलेशन ऑफिसर, ग्लोबल हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर, माउंट आबू, जिला- सिरोही, राजस्थान

माइंड पॉवर ऑफ YOUTH

युवा देश के कर्णधार होते हैं, ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़कर आज लाखों युवाओं का जीवन बदल गया है, ऐसे परिवर्तनकारी युवाओं की अनुभव गाथा...

बीके मनीषा (32)
एमएससी, बीएड,
गोहाना, हरियाणा

मुझे बचपन से ही पवित्र जीवन अच्छा लगता था

शिव आमंत्रण, आबू रोड । जब ब्रह्माकुमारीज़ और बहनों के संपर्क में आई और राजयोग मेडिटेशन का कोर्स किया तो मुझे सबसे ज्यादा दीदियों की पवित्रता ने आकर्षित किया। क्योंकि बचपन से मेरा भी सपना था कि मुझे पवित्र जीवन जीना है। राजयोग मेडिटेशन के नियमित अभ्यास से पहले से ज्यादा आत्म विश्वास बढ़ गया है। अब ऐसा लगता है कि मैं जीवन में सबकुछ कर सकती हूं। इसके साथ ही सहनशक्ति भी बढ़ गई है। अब कोई परिस्थिति या समस्या आने पर उसका सामना धैर्यता के साथ करती हूं। राजयोग से व्यक्ति के जीवन में दिव्यगुणों और दिव्य शक्तियों का विकास होता है।

हमारा व्यक्तित्व बहुआयामी बन जाता है। हर काम में आत्म विश्वास बढ़ जाता है। मेरे आध्यात्मिक पुरुषार्थ को बढ़ाने में किताबें की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। अब तो परमात्मा और किताबों को ही सच्चा दोस्त बना लिया है। खुद को भाग्यशाली समझती हूं कि मुझे परमपिता परमात्मा का सत्य ज्ञान मिला और इस जीवन में ईश्वर की सेवा करने का अवसर मिला। वर्तमान में ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्यालय में समर्पित रूप से अपनी सेवाएं दे रही हूं। आध्यात्म ही वह विधा है जो हमें खुद को खुद से और परमात्मा से जोड़ती है। मेरा मानना है कि आज के समय में सबसे ज्यादा युवाओं के लिए इस आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग मेडिटेशन की शिक्षा जरूरी है। क्योंकि आज के युवा सबसे ज्यादा तनाव में हैं।

उपासना रावत
(34) बीटेक,
ग्वालियर, मप्र

मेरे सपने में दिखता था माउंट आबू

शिव आमंत्रण, आबू रोड । बाहर के विश्व विद्यालयों में जीवन यापन करने और भौतिक रूपी से तरक्की करने का ज्ञान दिया जाता है लेकिन ब्रह्माकुमारीज़ ही एकमात्र ऐसा विश्व विद्यालय है जहां आत्मा-परमात्मा की सत्य पहचान, उन्नति, तरक्की करने की शिक्षा दी जाती है। मुझे सपने में सतयुगी दुनिया दिखी थी और ब्रह्माकुमारीज़ में राजयोग मेडिटेशन का कोर्स करने के बाद सब स्पष्ट हो गया। राजयोग से मन पर नियंत्रण हो जाता है। वास्तव में जैसे शरीर का भोजन अन्न, फल-सब्जियां, अनाज है वैसे मन और आत्मा का भोजन राजयोग मेडिटेशन है। जब से ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान से जुड़ी हूं और राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास शुरू किया है तब से मन की सारी व्याधियां, समस्याएं दूर हो गईं हैं। अब पहले से ज्यादा खुश, प्रसन्न रहती हूं। मेरा अनुभव है कि राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास जितना आप गहराई से करते जाते हैं उतना आप अपने आप को, अपने व्यक्तित्व और मन को समझते जाते हैं। मन की शक्ति बढ़ने के साथ एकाग्रता का विकास होता है। इससे हम विपरीत परिस्थिति में बिना घबराए, धैर्यता के साथ उसका सामना कर सकते हैं। राजयोग से जीवन जीने की कला आती है और हमारे कर्म सुकर्म और श्रेष्ठ कर्म बन जाते हैं। अब तो हर पल प्यारे बाबा की याद में गुजरता है। मेरा युवाओं से आह्वान है कि अपने जीवन में राजयोग को शामिल करें और अपने व्यक्तित्व को नई ऊंचाइयां दें। साथ ही सफलता को शिखर पर पहुंचे।

प्रेरणापुंज

दादी गुलजार (हृदयमोहिनी)
पूर्व मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

सर्व संबंध बाबा से जोड़ेंगे तो प्यार की अनुभूति होगी

शिव आमंत्रण, आबू रोड। बाबा ने माताओं के ऊपर भारत या विश्व के कल्याण का कलश रखा है। द्वापर से विश्व कल्याण की जिम्मेवारी भाइयों (जो भी धर्म पिताएं आए हैं) ने उठाई है। लेकिन भाइयों की जिम्मेवारी से क्या हुआ। अब बाबा ने माताओं के ऊपर कलश रखा है, क्योंकि माताओं में कल्याण की भावना ज्यादा होती है। माताओं का बच्चे के प्रति स्नेह भी होता है, त्याग भी होता है और कल्याण की भावना भी होती है। तो वो हद की आदत तो है ही। अभी बाबा ने वो ही गुण बेहद के विश्व की जिम्मेवारी के लिए दिया है। माताओं को आगे आते हुए देख जो भारत के नेता वा जगतगुरु आदि हमारे पास समय प्रति समय आए हैं, उन्होंने भी कहा कि माता का प्यार हमने यहां देखा है। बाबा कहते हैं कि परिवार में रहते ट्रस्टी होकर रहो। परन्तु कईयों ने एक शब्द पकड़ लिया है कि प्रवृत्ति में रहना है लेकिन प्रवृत्ति में रहते ट्रस्टी रहो, उसमें गड़बड़ हो जाती है। तो निराले रहो परिवार में लेकिन अपने को जगत की जिम्मेवारी होगी ना। उसी जिम्मेवारी को अगर हर एक माता संभाले तो विश्व का कल्याण हुआ पड़ा है। होना तो है सिर्फ हम लोगों को बाबा निमित्त बनाकर आगे रखता है। तो अपनी इन विशेषताओं से विश्व का कल्याण करो।

वायदा किया तो उसे निभाओ...

कई बार वायदा तो करते हैं लेकिन यहां से जाते हैं तो घर के हो जाते हैं-ऐसे नहीं करना। वायदा करते हो तो निभाओ। योग भी क्या है? योग माना परमात्मा से लगन, परमात्मा से प्यार। परमात्मा से सर्व संबंध जोड़ना। जब बाबा से सर्व संबंध जोड़ लिया, जब बाबा ही मेरा संसार है तो बुद्धि संसार से बाहर कहां जाएगी? संसार में दो चीजें होती हैं-एक व्यक्ति, दूसरा वैभव और कुछ है क्या? अगर सर्व संबंधों का अनुभव नहीं किया है तो बुद्धि इधर-उधर जाएगी, योग नहीं लगेगा। जो संबंध बाबा से नहीं जोड़ा, अनुभव नहीं किया, वहां बुद्धि जाएगी ना।

तो फिर याद आएगा सखा....

बाबा को सखा नहीं बनाया है तो आप को सखी-सखा याद आएगा। मनुष्य की नेचर होती है कि जो ऐसी-वैसी बात मन में आई, वह जब तक निकालेंगे नहीं तब तक मन में चलती रहेगी। अच्छी बात है तो समां जाएगी। अगर कोई बात आप के सामने आती है और उस समय आपकी फ्रैंड बिजी है, तो उस समय तक अपने मन में बात रखनी है। लेकिन मान लो उसी समय आपकी मृत्यु हो जाए तो आपका पद क्या होगा। अंत मति सो गति होगी? अंत अच्छी नहीं हुई तो बाकी आए किसलिए? इसलिए सर्व संबंध बाबा से जोड़ना है। एक भी संबंध कम नहीं हो।

पूर्ण स्वराज्य ईश्वरीय ज्ञान से ही संभव

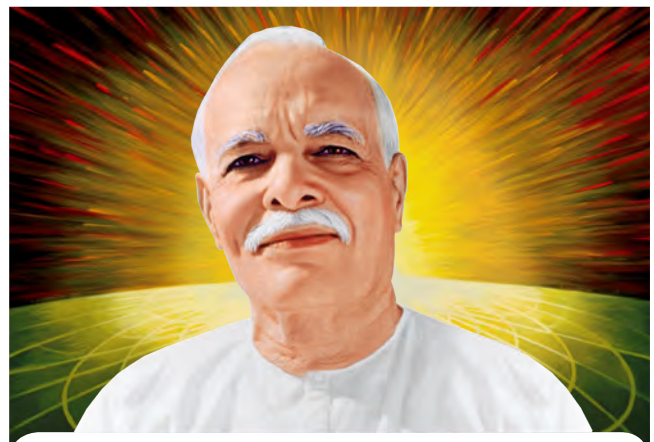

रियल लाइफ

प्रजापिता ब्रह्मा बाबा
संस्थापक, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

अन्ध-श्रद्धा पर आधारित भक्ति से मनुष्य कैसे पतित होता आया है?

शिव आमंत्रण, आबू रोड। ब्रह्माकुमार चंद्रहास जी ने लिखा है- समाचार पत्रों और रेडियो द्वारा ब्रह्मा बाबा को यह तो समाचार मिलता ही रहता था कि कौन विशिष्ट व्यक्ति क्या कर रहा है अथवा संसार में कहां क्या हो रहा है। अतः बाबा उन विशिष्ट व्यक्तियों को पत्र या तार भिजवाकर उनका भी कल्याण करने, उन्हें ईश्वरीय संदेश और शिक्षा से परिचित करने अथवा उन्हें ईश्वरीय यज्ञ के किसी कार्य से सहयोगी बनाकर उनका भाग्य भी उच्च बनाने की कोशिश करते थे।

जब ओम् मंडली हैदराबाद में थी तो ब्रह्मचर्य व्रत लेने के कारण कई कन्याओं पर उनके पिता अत्याचार करते थे। उन्हें विकारी विवाह करने के लिए बाध्य करने की कोशिश करते थे। कई पुरुष वासना के लिए अपनी पत्नी पर सितम ढाते थे। अतः अन्य लोगों को भी पवित्रता के ईश्वरीय आदेश से परिचित कराने के लिए और अन्य कन्याओं-माताओं के बचाव के लिए कुछ उपाय करने के लिए बाबा ने कुछ पत्र लिखवाए थे।

एक पत्र पशुओं पर होने वाले अत्याचार की रोकथाम की संस्था की प्रधान को 23 जुलाई 1938 को भेजा गया था। उसमें बताया गया कि किस प्रकार 15 वर्षीय कन्या गोपी को उसके संबंधियों ने एक कमरे में चार दिन ताले में बंद रखा और उसे खाना नहीं दिया। कन्या के भाई ने उसे बहुत ही निर्दयता से मारा। इस प्रकार प्रधान मिस पिग्गट को लिख कर कहा गया कि पशुओं की तो बात एक ओर रही, मनुष्यों पर देखो कितने अत्याचार हो रहे हैं। इसके साथ ही उसे सुझाव दिया गया कि मनुष्य-जाति पर हो रहे अत्याचारों की रोकथाम के लिए भी कोई कदम उठाना चाहिए। अगर उनकी संस्था केवल पशुओं पर होने वाले अत्याचार की रोकथाम के लिए ही कार्य करती है तो एक दूसरी संस्था बनानी चाहिए जो मनुष्य-जाति पर हो रहे अत्याचार की रोकथाम के बारे में कुछ ठोस कार्य करे।

महात्मा गांधी, रवीन्द्रनाथ टैगोर और चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य आदि-आदि के नाम पत्र, तार और प्रवचन-

बाबा ने महात्मा गांधी जी को वर्धा में और कविराज रवीन्द्रनाथ टैगोर जी को एक पत्र (यह पत्र दिनांक 27 अगस्त, 1938 को भेजा गया था) संलग्न करके दो ज्ञान-मुरलियों (प्रवचनों) की प्रतियां भेजी थीं। उन प्रवचनों में तत्कालीन परिस्थितियों पर और आने वाले समय पर प्रकाश डाला गया था और वास्तविक स्वतंत्रता कैसे प्राप्त हो सकती है।

समाज में नारी का क्या स्थान होना चाहिए?

पत्र में यह भी लिखा था कि आत्मानुभूति की कितनी आवश्यकता है और समाज में नारी का क्या स्थान होना चाहिए- इस बारे में भी ईश्वरीय महावाक्यों का उल्लेख था। महात्मा गांधीजी जिन दिनों सत्याग्रह, अनशन और सिविल नाफर्मानी आदि को अपनाकर अंग्रेज सरकार के विरुद्ध आंदोलन चला रहे थे, तब भी बाबा ने एक तार (यह तार दिनांक 5 मई, 1939 को भेजा था) महात्मा गांधी जी के नाम भिजवाया था। उस तार की प्रति चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य जी, आचार्य कृपलानी जी और भोलाभाई देसाई जी को भी भेजी गई थी। उस तार में लिखा था- 'प्यारे गांधी जी, अनशन और सिविल नाफर्मानी आदि हठयोग के विभिन्न रूप हैं। पूर्ण स्वराज्य की प्राप्ति ईश्वरीय ज्ञान और दिव्य साक्षात्कार के बल से प्राप्त हो सकती है। आत्मिक-बल से ही विज्ञान-बल को जीता जा सकता है... वर्तमान समय धर्म-ग्लानि का समय है। अब परमपिता परमात्मा फिर से आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना करा रहे हैं। यह महाभारत युग है।

मन में शांति है तो ईश्वरीय सुख भाग्यवान की महसूसता होती है

प्रेरणापुंज

दादी जानकी
पूर्व मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

संगठन में चाहिए सहनशीलता, सच्चा स्नेह और सच्चाई

शिव आमंत्रण, आबू रोड। यहां सबसे अच्छी बात यह है जो हर एक समझते हैं कि मेरे जैसा भाग्यशाली कोई नहीं है। यह एक ही संगमयुग है जो छोटा-बड़ा, बाबा का हर एक बच्चा बाबा को देख, बाबा को जान करके बाबा-बाबा जिगर से कहते अपने को भाग्यवान बना देते हैं। तो भाग्यवान कौन? जिसके दिल से बाबा-बाबा निकलता रहे। बाबा-बाबा किसके दिल से निकलता है? जो अपने मन को अच्छा समझाता है। मन को प्यार से समझाना, बाबा में लगा देना, श्रीमत पर चलने के लिए सिखाना। मन को श्रीमत प्यारी लगे वह भाग्यवान। मनमत, परमत के प्रभाव से आजाद हो जाए, वही पद्मापदम भाग्यशाली बन जाते हैं।

मात-पिता, टीचर-सतगुरु की श्रीमत सैक्रीन के मुआफिक है। श्रीमत को पालन करने वाला अपने आप मेहनत से मुक्त हो जाता है। मनमत मेहनत को बढ़ाती है। परमत अपने तरफ खींचती है, भगवान से दूर करती है। बाबा का बन करके रहने नहीं देती है। कमजोर बना देती है। सर्वशक्तिमान का बच्चा होते हुए भी अपने में शक्ति महसूस नहीं करते हैं, क्योंकि अपने पुराने संस्कार, स्वभाव जो बाबा चाहता है, वह हमको करने नहीं देते हैं। इसलिए इस बार बाबा ने हम बच्चों को इन सबसे मुक्त होने वा मुक्ति वर्ष मनाने का इशारा दिया है। इन इशारों को ध्यान में रख कर, समझदार बन सर्व बंधनों से मुक्त रहने की मेहनत करनी है। कोई न कोई बंधन जो पहले नहीं था, वह भी पैदा हो जाएगा तो अपने आपको बंधन से मुक्त करने के लिए गुप्त योगी, सच्चा और निरन्तर सहयोगी रहना है। किसी बात से किनारा नहीं करना है, परन्तु अच्छी तरह से निभाना है। इसमें सिर्फ सहनशीलता, सच्चा स्नेह और सच्चाई चाहिए। इस ज्ञान मार्ग में अकेला कोई पुरुषार्थ करके अपनी अच्छी स्थिति बनाकर रखे वह भी ठीक है, लेकिन ऐसी स्थिति हो जो सबके साथ-साथ निभाना, एक दो को समझाना जरूरी है। टक्कर में नहीं आना लेकिन मिल करके रहने में भी कुछ मिक्सचर न हो। क्या करें ऐसे रहना पड़ता है, नहीं सच्चाई और स्नेह से एक दो की उन्नति के लिए हमको मिल करके रहना है। जितना बड़ा संगठन, जितनी बड़ी फैमिली, उतना स्नेह और सच्चाई, इससे संगठन की शक्ति बढ़ती है। छोटे-बड़े इस गुण को धारण कर सकते हैं, लेकिन जिसमें थोड़ा सा परचिंतन में आने की और अपसेट होने की आदत है, वह मिलनसार नहीं बन सकते हैं। जो औरों के अवगुणों को नोट करते हैं, वह मिलनसार नहीं बन सकते हैं।

सभी में देखें गुण व विशेषताएं...

सभी के गुण और विशेषताओं को देखें तो हम मिलनसार बन सकते हैं। थोड़ा साक्षी हो करके देखो। एक-एक को देखते हुए यह चेक करो कि मेरे मन में किसी के लिए ग्लानी तो नहीं है? नहीं है तो अन्दर आत्मा शांत है। शांति है तो अन्दर ईश्वरीय सुख की संपत्ति में अपने आपको भाग्यवान महसूस करते हैं। क्योंकि यह संपत्ति जिसके पास होगी वह सबको अच्छा लगता है और उसे भी सब अच्छे लगते हैं, जिसमें जिस्मानी प्यार की अंश भी नहीं है, रूहानी स्नेह जो बाबा से मिलता है, वह हमारे नयनों में बरसता रहे। हमारी वृत्ति शुभभावना वाली, रूहानी स्नेह को अन्दर कायम रख सकती है। देखा जाता है पहले हमारी कामना जो भी है वह बिल्कुल शुद्ध हो। बाकी और सब कामनाओं से फ्री, मुक्त हों।

"लौकिक और ईश्वरीय संपत्ति को समर्पित कर साक्षी हो जाओ!"

वर्ल्ड ग्लूकोमा वीक] ट्रॉमा सेंटर आबू रोड की ग्लूकोमा और आई स्पेशलिस्ट डॉ. शालिनी ने बताए आंखों की देखभाल के उपाय

अपनी आंखों की समय रहते देखभाल जरूरी

- 35 साल की उम्र की बाद हर छह माह में आंखों की जांच जरूरी, बिना डॉक्टर के परामर्श कोई भी दवा आंखों में नहीं डालें
- समय रहते सही इलाज मिलने से बच सकता है आंखों का अंधापन

- हर दस में से एक आदमी ग्लूकोमा की समस्या से पीड़ित है। दुनियाभर में करीब 6.50 करोड़ लोगों को ग्लूकोमा है।
- भारत में अंधेपन के 100 में से 12 केस ग्लूकोमा की वजह से हैं।

डॉ. शालिनी
ग्लूकोमा और आई स्पेशलिस्ट
ट्रॉमा सेंटर आबू

शिव आमंत्रण, आबू रोड (राजस्थान)। आंखों हमारे शरीर की सबसे महत्वपूर्ण और नाजुक अंग होती हैं। ऐसे में इनकी देखभाल करना उतना ही जरूरी है। क्योंकि बिना रोशनी के जीवन अंधकारमय हो जाता है। सामान्यतः लोग आंखों की देखभाल और इलाज को लेकर लापरवाही बरतते हैं जो आगे चलकर गंभीर रोगों का कारण बन जाता है। ऐसे में यदि आप भी 35 साल से ऊपर उम्र पार कर चुके हैं और आंखों से जुड़ी समस्याओं से जूझ रहे हैं तो तुरंत नजदीकी नेत्र रोग विशेषज्ञ से परामर्श लें। विश्वभर में हर साल 7 से 13 मार्च तक वर्ल्ड ग्लूकोमा वीक मनाया जाता है। इस दौरान आई अवेयरनेस प्रोग्राम आयोजित किए जाते हैं। नेत्र संबंधी समस्याओं और उनके समाधान को लेकर शिव आमंत्रण ने खास ट्रॉमा सेंटर आबूरोड की ग्लूकोमा और आई स्पेशलिस्ट **डॉ. शालिनी** से बातचीत की, आइए उन्हीं से जानते हैं कैसे करें अपने नैत्रों की संभाल-

World Glaucoma Week
March 6 - 12, 2022

वर्ल्ड ग्लूकोमा वीक
(6 से 12 मार्च) पर विशेष....

ग्लूकोमा क्या है?

ग्लूकोमा को आम भाषा में काला मोतिया कहते हैं। आंख के अंदर अंगों के पोषण के लिए एक तरल पदार्थ उत्पन्न होता है। पोषक के बाद यह तरल पदार्थ आंख के महीन छिद्र (फिल्टर) से बाहर निकलते हैं। उम्र के साथ छिद्र तंग होने शुरू हो जाते हैं। इससे तरल पदार्थ के निकलने की प्रक्रिया थोड़ी बाधित होती है। इससे आंख का प्रेशर बढ़ने लगता है। आंख का बढ़ा प्रेशर ऑप्टिक नर्व (आंखों से दिमाग को सिग्नल भेजने वाली नर्व) को डैमेज करता है। आमतौर पर ऐसा आंखों पर ज्यादा जोर पड़ने से होता है। दरअसल, ऑप्टिक नर्व काफी सेंसिटिव है, इसलिए जरा भी ज्यादा प्रेशर पड़ने पर यह ब्लॉक हो जाती है। इससे दिखना बंद हो जाता है।

दो तरह का होता ग्लूकोमा

1. ओपेन एंगल ग्लूकोमा

यह धीरे-धीरे बढ़ता है और मरीजों को पता ही नहीं चलता। जब आंख के बढ़े प्रेशर से ऑप्टिक नर्व खराब हो जाती है तो उसे ओपेन एंगल ग्लूकोमा कहते हैं। यह सबसे ज्यादा कॉमन है। इसमें तरल पदार्थ को ड्रेन करने वाली कनैल ब्लॉक हो जाती है। इससे आंख का प्रेशर बढ़ जाता है। इसके होने से आंख की नजर धीरे-धीरे कमजोर होती है। यदि इसका समय रहते पता चल जाए तो आंख की रोशनी बचाई जा सकती है। वरना इसका कोई इलाज नहीं है।

ओपेन एंगल ग्लूकोमा के लक्षण

- हलका सिर में दर्द
- आंख में भारीपन
- नजदीक का चश्मा बार-बार बदलना
- बल्ब बुझने के कुछ देर बाद भी नहीं दिखना

2. एंगल क्लोजर ग्लूकोमा

यह कम खतरनाक है और इसका इलाज उपलब्ध है। इसमें मरीज को अचानक अटैक पड़ता है और नजर कमजोर हो जाती है। इसमें बहुत तेज दर्द होता है और मरीज सीधे डाक्टर के पास पहुंचता है।

ये हैं लक्षण

- भयंकर दर्द होता है। आधे सिर में दर्द होता है।
- उल्टी आने की आशंका रहती है।
- अचानक से नंबर कम हो जाता है।

ये रिस्क फैक्टर हैं तो ग्लूकोमा हो सकता है

- परिवार के किसी सदस्य को हुआ हो।
- यदि शुगर के मरीज हैं तो
- माइनेस नंबर है और बार-बार कम हो रहा है
- 35 वर्ष के उम्र के पार हैं।
- अंधेरे में देर से नजर आना।
- रोशनी में अलग-अलग रंग दिखना
- अस्थमा व आथराइटिस जैसे रोगों में लंबे समय तक स्टेरायल ले रहे हों।
- कभी आंख का कोई जख्म हुआ हो या कोई सर्जरी हुई हो।
- यह बच्चों में भी हो सकता है।

आंखों की चली जाती है रोशनी

ग्लूकोमा के बारे में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इसके चलते नजर का जो नुकसान हो गया, उसका कोई इलाज नहीं है। अगर पता न चले तो यह मर्ज धीरे धीरे बढ़ता रहता है और ज्यादा बढ़ जाने पर अंधेपन की भी नौबत आ सकती है। हां, अगर इसका पता वक्त रहते चल जाए तो आगे और नुकसान से बचने के लिए इलाज और देखभाल की जा सकती है।

35 के बाद आंखों की नियमित जांच कराएं

35 साल की उम्र के बाद ग्लूकोमा होने के संभावना बढ़ जाती है। 35 की उम्र के बाद आंखों की नियमित जांच कराते रहें। हो सकता है इस उम्र के लोगों को लगे कि उनकी नजर मोतियाबिंद की वजह से कमजोर हो रही है, लेकिन नजर की कमजोरी ग्लूकोमा की वजह भी हो सकती है।

खुद भी कर सकते हैं अपनी आंखों की जांच

इस उदाहरण से समझें-अपनी आंख से किसी एक चीज को देखें। मान लिजिए पार्क में एक बच्चा बैठा है। बच्चे के एक तरफ हाथी का खिलौना है और दूसरी तरफ शेर का खिलौना है। हाथी और शेर के साथ एक-एक कुर्सी है। कुर्सी के साथ पेड़-पौधे। यदि आप की आंख ठीक है तो आपको बच्चा भी दिखेगा, हाथी-शेर भी दिखेंगे और पेड़-पौधे। यदि ग्लूकोमा के आप करीब हैं तो आपको बच्चे के साथ हाथी और शेर दिखेंगे। कुर्सियां नहीं। यदि ज्यादा करीब हैं तो सिर्फ आपको बच्चा दिखेगा। हाथी और शेर नहीं। विशेषज्ञों के मुताबिक ग्लूकोमा में फील्ड ऑफ विजन यानी नजर का दायरा सिकुड़ता है। जब ग्लूकोमा हो जाएगा तो आपको बच्चा भी नहीं दिखेगा।

ग्लूकोमा से बचने के उपाय

1. घर में अगर किसी को ग्लूकोमा है तो बच्चे को होने की ज्यादा संभावना होती है, क्योंकि यह एक आनुवांशिक बीमारी है। ऐसे में बच्चे की आंखों की जांच करवाना जरूरी है।
2. आंखों की एलर्जी, अस्थमा, चर्म रोग या किसी अन्य रोग के लिए स्टेरॉइड दवाओं का प्रयोग करने से आंखों में दिक्कत आ जाती है। ऐसी दवाईयों के सेवन से बचें।
3. आंखों में दर्द हो या लाल हो जाएं तो स्पेशलिस्ट डॉक्टर से सलाह लेकर ही दवा का प्रयोग करें।
4. खेलने के दौरान (टेनिस या क्रिकेट बॉल से) अगर आंखों में चोट लग जाए तो इसका इलाज कराएं।
5. आंखों में कभी किसी प्रकार की कोई सर्जरी हुई हो या कोई घाव हो गया हो तो उसकी जांच समय-समय पर करवाते रहें, क्योंकि सर्जरी से ग्लूकोमा होने का खतरा बढ़ जाता है।
6. हर दो साल में आंखों की नियमित जांच करवाते रहिए। चेकअप करवाने से आंखों की रोशनी का पता लगाया जा सकता है।
7. अगर आपके चश्मे का नंबर बदल रहा है तो तुरंत डॉक्टर से संपर्क कीजिए।
8. जब आप सीधे देख रहें हों तो आंखों के किनारे से न दिखाई दे रहा हो तब आंखों की जांच करवाएं।
9. आंखों में दर्द हो, सिर और पेट में दर्द हो तो इसको नजरअंदाज मत कीजिए, तुरंत चिकित्सक से संपर्क कीजिए।
10. आंखों को पोषण देने वाले तत्वों जैसे बादाम, दूध, संतरे का जूस, खरबूजे, अंडा, सोयाबीन का दूध, मूंगफली आदि का ज्यादा मात्रा में सेवन कीजिए।

आपके लिए विशेष जानकारी

अक्सर 40 की उम्र में लोगों की पास की नजर कमजोर पड़ने लगती है। आमतौर पर लोग पास की चश्में की दुकान में जाते हैं और अपनी आंखें टेस्ट करवाते हैं। दुकानदार सिर्फ आंख टेस्ट कर बढ़िया चश्मा दे देता है। उससे लोगों को अच्छा दिखता है और वे चलते बनते हैं, लेकिन जब भी इस उम्र में चश्मा बनवाएं तो अच्छे डॉक्टर से आंखों का पूरा चेकअप करवाएं।

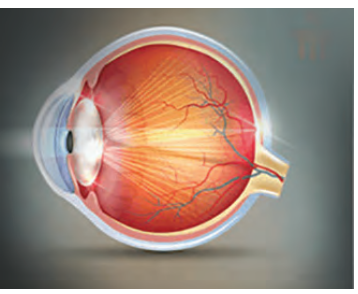

ये भी सावधानी बरतें

ग्लूकोमा से बचने के लिए आपको कुछ सावधानियां बरतने की जरूरत होती है। जैसे कि आंखों में कोई भी ड्रॉप डालने से पहले अपने हाथों को अच्छी तरह धो लें। दवाई को ठंडी और ड्राई जगह पर रखें। एक बार में एक ही ड्रॉप डालें और दो दवाइयों के बीच में आधा घंटे का गैप जरूर करें। अगर आप अपने आई स्पेशलिस्ट से लगातार मिलते रहते हैं और समय से दवाइयां लेते हैं, तो आप अपने ग्लूकोमा को समय से कंट्रोल करके एक नॉर्मल लाइफ जी सकते हैं।

ग्लूकोमा से जुड़े कुछ तथ्य

- दुनियाभर में 10 में से 1 आदमी ग्लूकोमा से पीड़ित है। दुनियाभर में करीब साढ़े छह करोड़ लोगों को ग्लूकोमा है।
- भारत में एक करोड़ से ज्यादा लोगों को ग्लूकोमा है। इनमें से करीब 10 लाख लोग अंधेपन का शिकार हो चुके हैं।
- भारत में अंधेपन के 100 में से 12 केस ग्लूकोमा की वजह से हैं।

समस्या समाधान

ब्र.कु. सूरज भाई
वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षक

अपने श्रेष्ठ भाग्य को याद करके मन को आनंदित कर दें...

पिछले अंक से क्रमशः

सुबह उठकर करें पांच स्वरूपों का अभ्यास

हम सभी ने बाबा की मुरलियों में सुना है, स्वदर्शन चक्र घुमाने से तुम्हारे पाप कट जाएंगे। मनमनाभव होने से पाप कटेंगे। बीजरूप से पाप कटेंगे। स्वदर्शन चक्रधारी होने से भी पाप कटेंगे। पांचों स्वरूपों का अभ्यास स्वदर्शन चक्र का अभ्यास है। रोज सुबह यदि उठकर पांच स्वरूपों का अभ्यास पांच बार कर लिया जाए तो अमृतवेले की सभी समस्याएं समाप्त हो जाएंगी। याद कर लें अनादि स्वरूप निराकार आत्मा, दूसरा आदि स्वरूप देव स्वरूप, तीसरा पूज्य स्वरूप, ब्राह्मण स्वरूप और फरिश्ता स्वरूप। हर एक स्वरूप के अभ्यास के साथ खुद को कॉमेंट्री दें। पहले तीन-तीन सेकंड करें, फिर पांच-पांच सेकंड और फिर दस-दस सेकंड। मैं आत्मा हूं...मुझसे चारों ओर किरणें फैल रही हैं शान्ति की, इसे तीन सेकंड के लिए देखें। मैं देवता हूं... सतयुग में डबल ताजधारी। देवयुग में ले चलें अपने को तीन सेकंड के लिए। मैं इष्ट देव... मैं इष्ट देवी मंदिर में हूं। ये बहुत अच्छा स्वरूप है। मेरे सामने हजारों भक्त और मैं अपनी दृष्टि से, हाथ से सभी को शान्ति के वायब्रेशन्स दे रही हूं। बहुत अच्छा अनुभव होगा।

योग में करें भिन्न-तरह के अभ्यास

मैं फरिश्ता ग्लोब के ऊपर बैठा हूं... धरती के गोले के ऊपर सर्वशक्तिमान बाबा मेरे सिर के ऊपर छत्र हैं। उसकी किरणें मुझमें समां रही हैं। कुछ देर अपने को इस स्थिति में स्थित करेंगे। अनुभव करें वह किरणें मुझसे चारों ओर फैल रही हैं, सारे विश्व में पहुंच रही हैं। क्बाबा की पावरफुल शक्तियां मिल रही हैं।

मैं मास्टर ज्ञानसूर्य हूं

मैं मास्टर ज्ञानसूर्य हूं... और ज्ञानसूर्य शिव बाबा की किरणें मुझ पर आ रही हैं और मुझसे चारों ओर फैल रही हैं। इस स्थिति के बारे में बाबा के बहुत ही शक्तिशाली महावाक्य हैं। शक्तिशाली महावाक्य का अर्थ है एक महावाक्य है- बाबा ने कहा 'तुम्हारा मुख्य कार्य है ज्ञानसूर्य से शक्तियों की किरणें लेकर सारे संसार में फैलाना' बाकी सभी कार्य निमित्तमात्र हैं।

बाबा मेरा सद्गुरु है

चौथा ब्राह्मण स्वरूप के लिए हमें किसी न किसी स्वमान में स्थित होना है। सुबह उठते ही पहला संकल्प करें कि बाबा मेरा सद्गुरु है और सद्गुरु ने अपना वरदानी हाथ रख दिया मेरे सिर पर। सद्गुरु का वरदानी हाथ आ गया मेरे सिर पर और उसके हाथ से निकलने लगी रंग-बिरंगी किरणें। जो हमारे सारे शरीर में फैलने लगी हैं। एक मिनट तक ले आओ अपने को इस स्वरूप में तो सर्वशक्तिमान की शक्तियां ब्रह्मा बाबा के सूक्ष्म भाग द्वारा आत्मा में और हमारे पूरे शरीर में फैलने लगी हैं। ब्राह्मण स्वरूप का ये अभ्यास करें। फिर मैं फरिश्ता हूं लाइट के शरीर में हूं। इससे एकाग्रता बढ़ जाएगी। सुबह नींद आती है तो समाप्त हो जाएगी।

तो मन होगा शांत...

परमधाम की स्थिति जिसे बीजरूप कहते हैं। ज्वाला स्वरूप कहते हैं। पावरफुल स्थिति कहते हैं। मुक्त स्थिति कहते हैं। बंधनों से मुक्त। मैं आत्मा परमधाम में हूं। बाबा के साथ बस बाबा की किरणें मुझमें समां रहीं हैं। इसके अलावा ज्यादा संकल्प नहीं किरणें लेते रहना। जब हमारी बुद्धि स्थिर हो जाती है तो संकल्प भी शांत हो जाते हैं। बुद्धि से हम विजुलाइज कर रहे हैं। सर्वशक्तिमान की किरणें आ रही हैं। इससे जहां मन शान्त होगा तो योग भी शक्तिशाली होगा।

हमारे हर कर्म पर होती है प्रभु की नजर

स्व-प्रबंधन

बीके ऊषा
स्व-प्रबंधन विशेषज्ञ, माउंट आबू

व्यक्ति के अच्छे कर्म का फल भी जमा होता जाता है जो उसे सुख के रूप में जीवन में मिलता है

जैसे आज की दुनिया में किसी व्यक्ति के कर्मों का स्टिंग ऑपरेशन किया जाता तो वह इन्कार नहीं कर सकता। ठीक इसी प्रकार चित्रगुप्त ने भी हम सभी में एक गुप्त कैमरा ऐसा लगाया है जो हर कर्म को चाहे कोई देखे या न देखे लेकिन हर पल गुप्त स्टिंग ऑपरेशन होता रहता है। तभी तो दुनिया में कहा जाता है कि व्यक्ति अपने आप से छिप नहीं सकता। माना हरेक व्यक्ति में एक चित्रगुप्त है। वह कभी कोई गलत हिसाब नहीं रखता। इसीलिए मनुष्य जब भी कोई कर्म करे तो यह न सोचे कि जो मैं कर रहा हुँ वह कोई देख नहीं रहा है। भगवान भी नहीं देख रहा है। लेकिन हर कर्म करते समय किस वृति से किया? किस भावना से किया? उन सब बातों का गुप्त चित्र संस्कारों में समा जाता है जिसको कोई मिटा नहीं सकता और वह चित्र हमारे भीतर ही रहता है। जब व्यक्ति शरीर त्याग करता तो संस्कारो में पड़े सारे चित्रों की फाईल को चित्रगुप्त खोलकर रख देता है। जैसे किसी कीड़े को मैग्निफाइंग ग्लास के नीचे देखने से बहुत बड़ा भयानक दिखता है, वैसे ही एक- एक कर्म की सारे चित्र मैग्निफायड होकर व्यक्ति के सामने बहुत स्पष्ट और भयंकर रूप में नज़र आते हैं। उस कर्म करते समय की उसकी मनोवृति, भावनाएं भी बहुत ही स्पष्ट दिखाई देती हैं। उस समय भगवान तो क्षमा का सागर है, वह तो क्षमा कर देते है। लेकिन आत्मा खुद ही खुद को कभी क्षमा नहीं कर पाती। जब हम खुद स्वयं को क्षमा नहीं कर पाते हैं तब उन कर्मों को स्वीकार करके, बुरे कर्म का फल भोगने के लिए संसार में पुनः आते हैं। कर्मों के आधार पर आत्मा आने वाले जन्मों में भावी या होनी को निश्चित करती है,जिससे कोई भाग नहीं सकता तभी कहा जाता है कि भावी या होनी टाले नहीं टले।

यदि भगवान कुछ नहीं कर सकता , फिर भगवान को याद क्यों करें?

भगवान क्षमा का सागर है वह मनुष्यों को

अपनी गलती को सुधारने का मौका ज़रूर देता है ताकि मानव अपने भविष्य को सुधार सकें। परन्तु मनुष्य अपने अहंकार में इतना चुर होता कि वह सारे अवसरों को गंवा देता है। या कभी-कभी वह भगवान को भी खरीदने का प्रयत्न करता है या एक प्रकार से रिश्वत देने का प्रयत्न करता है। मनुष्य अपने अज्ञान और अंहकार में आकर यही सोचता है कि एक तरफ बुरे काम हो रहे हैं तो दूसरी ओर वह कुछ गरीबों को दान करके या भगवान के नाम पर मंदिरों में दान करके या मंदिर बनवाकर सोचता है कि भगवान उसके बुरे कर्मों को माफ कर देगा और वह सारे बुरे कर्मों की भोगना से छूट जाएगा। परन्तु कर्म की गति अति गुह्य है। इस बात को समझने के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत है - मान लो हमने कोई व्यापार करने के लिए किसी से पैसे उधार लिए हैं और व्यापार में मुनाफा होने पर हम सोंचे कि किसी मंदिर में दान करते हैं। यह बहुत अच्छा विचार है, परन्तु जिससे उधार लिया है वह व्यक्ति जब अपना पैसा मांगने आये तो उस वक्त हम उसे कह दें कि वह तो मैंने मंदिर में दान कर दिया अब भगवान तुम्हारी उधारी चुका देंगे, तो यह कैसे संभव है? विवेक भी यही कहता है कि जिससे उधार लिया है उसको तो पहले चुकाना पड़ेगा और दान करके पुण्य कमाया है उसका फल समय आने पर मिल जाएगा। वैसे व्यक्ति के अच्छे कर्म का फल भी जमा होता जाता है, जो उसको सुख के रूप में प्राप्त होता है लेकिन बुरे कर्म का हिसाब अलग जमा होता है जिसकी भोगना दुःख के रूप में भोगनी पड़ती है। क्रमशः

अग्निपथ के समान है आध्यात्म का मार्ग

आध्यात्म की उड़ान

डॉ. सचिन
मेडिटेशन एक्सपर्ट

जीवन में तमाम परिस्थितियों के बीच हमें मन को शांत और स्थिर रखने की कला सीखना होगी

बात-बात में नाराज, बात-बात में उदास, मुरझाना-रूसना। आंसू तो यहीं रोक के रखे हैं बस बटन दबाने के देरी है। योग की धूप भी नहीं सुखा सकती। इतनी पावरफुल टंकी है, चाहे जितना भी अमृतवेला कर लो, मुरली का अध्ययन कर लो, भट्टियां कर लो हमारी टंकी खाली नहीं होगी। योग की धूप से आंसुओं की टंकी को सुखा दो तो महावाक्य है बाबा का कि फीलिंग देवी, टच मी नाट देवी, छुई-मुई, सेंसीटिव नेचर एक बहुत बड़ी कमजोरी है। आधी मृत्यु है। ये मार्ग तो अग्नि पथ है। आग पर चलने का मार्ग है, अंगारों पर चलने का मार्ग है। यहां अगर रोते रहे, दुःखी, उदास, नाराज, रूसते-रूठते रहे तो चल नहीं पाएंगे।

यूनान में बहुत महान योद्धा था हरक्यूलिस। ऐसा माना जाता है कि उस जैसा योद्धा आज तक पैदा ही नहीं हुआ। महानायक इलियाट की किताब, इलियाट का महानायक, सबसे बड़ा योद्धा और जब उसका जन्म ही नहीं हुआ था कि उसके बारे में भविष्यवाणी थी कि वो जल्दी मर जाएगा तो उसकी मां ने उसे रहस्यमयी नदी के पास ले गईं।। इथिटस नाम की चोटी थी। मां ने उसे नदी में डाल दिया और उसका सारा शरीर वज्र जैसा बन गया। कोई नहीं मार सका। परन्तु जहां उसकी मां ने उसे पकड़ा था उतना ही भाग रह गया ओर फिर बाद में जब ट्राय का युद्ध हुआ पर कोई परास्त नहीं कर सका। अंत में उसके शत्रु को पता चल गया कि यहां अगर मारा जाए यानी एड़ी पर तो यह मरेगा और उसकी मृत्यु एड़ी पर लगे विष भुजतीर से होती है।

एक कहावत है कि हरक्यूलिस की एड़ी हरक्यूलिस हील अर्थात हर व्यक्ति का एक बिन्दु जहां वो कमजोर है। उसी तरह एक वीक पाइंट ब्राह्मणों का भी होता है। वैसे वह चलते-चलते सभी धारणाओं में मजबूत हो जाते हैं। पवित्रता में, सत्यता में लेकिन चेतना के स्तर पर एक वीक पाइंट रह जाता है, वहां पर जैसे ही आक्रमण किया जाए तो घायल। माता आई मधुबन में सेवा में दो मास। जाते समय किसी ने कह दिया। अच्छा तो जा रहे हो खाया-पीया और चल दिए। ऐशोआराम करके। ऐसा तीर चुभ गया अन्दर कि हम तो लगन के साथ बाबा की सेवा में आए थे। दिन-रात बाबा बाबा-बाबा और ये कैसे बोल बोलते हैं लोग। रातभर मेहनत किया। आंगन में बैठकर रंगोली बनाई। नींद छोड़कर। सुबह कोई कहता कि कौन है ये, किसने निकाल दिए। एकदम खराब, दुःखी, उदास। छह घंटे बैठकर भोजन बनाया। खाने वाले ने कहा कि ये भी कोई भोजन है। लेकिन दुःख क्या तीर लग गया, उदास हो गए। अभी तक खिला हुआ फूल था, अब कुम्हला गया, मुरझा गया। कांटा ही ऐसा चुभा और कांटों की ये तो दुनिया ही है। इन सबके बीच हमें मन को स्थिर और खुश रखने की कला सीखना होगी। ताकि वह हर परिस्थिति में एकरस, आनंदित रहे।

लोग कांटे लेकर खड़े हैं...

मुरली क्लास पूरी हुई, दरवाजे से बाहर निकलते ही लोग कांटे लेकर खड़े हैं। वहीं से कांटे चुभने चालू। इधर से चुभाया, उधर से चुभाया। पता नहीं कहां-कहां से चुभाया। जिधर देखो लोग कांटे ही चुभाने वाला कार्य कर रहे हैं। यह सारा संसार ही कांटों का सागर है। ऐसे कांटों के सागर में, इस प्रकार की दुनिया में चारों तरफ शूल बिछे हैं। जहां चारों तरफ आंधी, तूफान, विरोध, कमेंट, दुखी करने वाले शब्द, पता नहीं क्या-क्या है पूछो मत। कमेंट बिल्कुल आत्मा को अंदर से हिला देते हैं। यहां दोष लगाने वाले, आरोप लगाने वाले लोग हैं। लेकिन हमें इन सबसे बचकर रहना सीखना होगा।

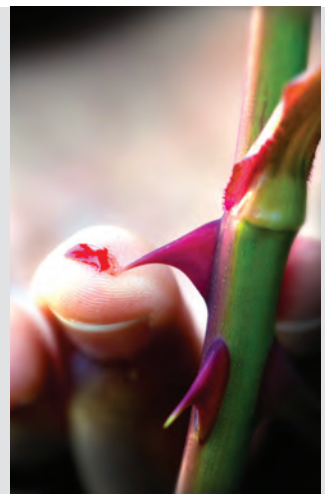

सर्च- लाइट बनने के लिए स्वयं को सर्च करना है

बाबा की शिक्षाओं को किया याद

शिव आमंत्रण, निम्बाहेड़ा (राजस्थान)। ब्रह्माकुमारी सेवाकेंद्र पर संस्थापक ब्रह्मा बाबा के पुण्य स्मृति दिवस 18 जनवरी पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस दौरान सदर थाना प्रभारी सूरज बैरवा, ब्रिज किशोर भाई, बीके शिवली, बीके अनिता ने श्रद्धासुमन अर्पित कर बाबा की शिक्षाओं को याद किया।

खाद्य मंत्री ने पुष्पांजली अर्पित की

शिव आमंत्रण, बतौली (छग)। ब्रह्माकुमारीज़ उपसेवाकेन्द्र में पिताश्री ब्रह्मा बाबा के 53वें पुण्य स्मृति दिवस पर शांति स्तम्भ और बाबा की कुटिया बनाई गई। कार्यक्रम में पहुंचे छग के खाद्य एवं संस्कृति विभाग राज्यमंत्री अमरजीत भगत ने ब्रह्मा बाबा को श्रद्धांजलि देने के साथ मेडिटेशन की सुखद अनुभूति की। साथ ही राजयोग मेडिटेशन अपनाने पर जोर दिया।

रीता बहुगुणा को दिया संदेश

शिव आमंत्रण, चुनार/वाराणसी (यूपी)। भाजपा की जन विशाल रैली के चुनार पंडरी बाजार में पहुंचने पर वाराणसी सेवाकेंद्र की बीके तारा ने रैली में आई भाजपा नेता रीता बहुगुणा जोशी को ईश्वरीय संदेश एवं ईश्वरीय सौगात प्रदान की। इस मौके पर कौशांबी सांसद विनोद सोनकर, विद्युत मंत्री रमाशंकर सिंह पटेल व अन्य मौजूद रहे।

व्यसनमुक्ति का लिया संकल्प

शिव आमंत्रण, पन्ना, मप्र। राष्ट्रीय युवा दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में युवाओं ने व्यसनमुक्त जीवन जीने का संकल्प लिया। कार्यक्रम में सेवाकेंद्र प्रभारी बीके सीता, डॉ. देवव्रत सिंह, मनोज मिश्रा, लेक्चरर सुनील श्रीवास्तव आदि मौजूद रहे।

अमृत महोत्सव का शुभारंभ

शिव आमंत्रण, राजगढ़ (मप्र)। आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर अभियान का शुभारंभ ब्यावरा सेवाकेंद्र द्वारा किया गया। विधायक रामचंद्र दांगी, एसडीएम जूही गर्ग, पूर्व विधायक नारायणसिंह पंवार, ब्रह्माकुमारीज की जिला प्रभारी बीके मधु, वैश्य महिला प्रकोष्ठ की जिला अध्यक्ष आरती मंगल, बीके लक्ष्मी मौजूद रहीं।

अपने मन में संकल्प लें कि मुझे शक्ति रूप बनना है: बीके शैलजा

आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर अभियान के तहत राष्ट्रीय बालिका दिवस पर कार्यक्रम आयोजित

शिव आमंत्रण, छतरपुर (मप्र)। जीवन में यदि सही दिशा मिले तो नारी हर क्षेत्र मे नंबर वन स्थान ले सकती है। हम अपने मन में संकल्प लें कि मुझे शक्ति रूप बनना है। आई केन डू इट यह एक संकल्प ही हमें हर कार्य को संभव बनाने में मदद करेगा। कन्या ही वह रत्न है जो इस जग का उद्धार करेगी। उक्त उद्गार ब्रह्माकुमारीज़ के छतरपुर सेवाकेंद्र प्रभारी बीके शैलजा ने व्यक्त किए। मौका था राष्ट्रीय बालिका दिवस पर पावन धाम में आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर आयोजित कार्यक्रम का। महिला एवं बाल विकास परियोजना अधिकारी प्राची सिंह ने कहा कि मां का कर्तव्य निभाना सबसे महान है। केवल बच्चे पैदा करने से मां नहीं बन जाती। उसके लिए हमें त्याग और बलिदान की मूरत बनना पड़ता है। भाजपा महिला मोर्चा जिलाध्यक्ष उर्मिला साहू, अभिनेत्री रूपाली भारद्वाज, गार्गी आनंद (बीएसएनएल टीडीएम), महिला मोर्चा उपाध्यक्ष प्रियंका द्विवेदी, रेखा सिंह, बीके कमला, बीके भारती, बीके रजनी, बीके मधुकर, बीके मोहिनी, बीके नम्रता, बीके पूनम भी उपस्थिति रहीं। संचालन बीके रीना ने किया। बीके रीमा, बीके सुमन ने म्यूजिक दिया।

राजयोग देता है मन को गहन शांतिः एसपी सचिन शर्मा

शिव आमंत्रण, छतरपुर (मप्र)। मैं जब भी ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय आता हूं तो मन को गहन शांति की अनुभूति होती है। मन में एक नई ऊर्जा का संचार होता है। उक्त उद्गार ऑडिटोरियम में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित खुशियों के बिग बाजार कार्यक्रम में छतरपुर एसपी सचिन शर्मा ने व्यक्त किए। माउंट आबू से पहुंचे मोटिवेशनल स्पीकर बीके शक्तिराज ने कहा कि मेडिटेशन एक ऐसी विधि है जिससे सभी प्रकार के ब्लॉकेज दूर किए जा सकते है। उन्होंने डीप मेडिटेशन द्वारा गहन शांति की अनुभूति कराई। कार्यक्रम में महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्व विद्यालय के स्पोर्ट्स ऑफिसर डॉ. अरविंद महलोनियां, शा. उत्कृष्ट विद्यालय क्र.1 स्पोर्ट्स ऑफिसर बृजेंद्र द्विवेदी, सचिव जिला बेसवाल संघ मानसिंह, हाईस्कूल प्राचार्य पुष्पेंद्र सिंह बघेल, आरडीएस उमा विद्यालय बमीठा संचालिका मती बघेल, स्पोर्ट्स ऑफिसर शाउ मॉडल वि. जितेन्द्र सिंह, जेलर राम रोमणी पांडेय, रोटरी क्लब अध्यक्ष मुकेश चौबे, पैथोलॉजी एसोसिएशन अध्यक्ष अशोक अवस्थी, सत्य शोधन आश्रम संचालक देवेन्द्र भंडारी सम्मलित हुए । संचालन सेवाकेंद्र प्रभारी बीके शैलजा ने किया।

आगराः नव शक्ति समारोह आयोजित

शिव आमंत्रण, आगरा (उप्र)। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के प्रभु मिलन सेवाकेंद्र पर कला एवं संस्कृति प्रभाग द्वारा नवशक्ति समारोह आयोजित किया गया। इस मौके पर सेवाकेंद्र प्रभारी बीके अश्विना, साहित्य गौरव सुरुचि सिन्हा, अपर आयुक्त आगरा मंडल साहब सिंह आईएएस, केंद्रीय हिंदी संस्थान के कुलसचिव चंद्रकांत त्रिपाठी, पत्रकार ब्रिज खंडेलवाल, संगीतज्ञ डॉ. रंजना सक्सेना मुख्य रूप से मौजूद रहीं।

नशामुक्ति के लिए वरदान है संस्था

शिव आमंत्रण, रीवा (मप्र)। ब्रह्माकुमारीज़ के शांतिधाम झिरिया सेवाकेंद्र पर युवा वर्ग के लिए स्नेह मिलन कार्यशाला आयोजित की गई। इसमें युवा समाजसेवी अविराज चौथवानी, एडिशनल एसपी शिव कुमार वर्मा ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ नशामुक्ति के लिए एक वरदान है। स्वच्छ भारत मिशन के नोडल अधिकारी एसके चतुर्वेदी, संचालिका बीके निर्मला दीदी, डॉ. बीके अर्चना, प्राचार्य बीके दीपक, बीके प्रकाश मौजूद रहे।

अमृत महोत्सव | आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर अभियान के तहत शास. हायर सेकंडरी स्कूल में आयोजन

छात्राओं ने रंगोली से दिखाई प्रतिभा

शिव आमंत्रण, बीना। ब्रह्माकुमारीज संस्थान के युवा प्रभाग द्वारा शासकीय हायर सेकंडरी स्कूल, खिमलासा में बसंत पंचमी पर रंगोली प्रतियोगिता आयोजित की गई। आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर अभियान के तहत आयोजित प्रतियोगिता में 50 छात्राओं ने भाग लिया। सेवाकेंद्र प्रभारी बीके जानकी दीदी ने बताया कि रंगोली प्रतियोगिता में छात्राओं ने पर्यावरण संरक्षण, भारत की स्वर्णिम संस्कृति से खुशहाली और उन्नति का संदेश दिया। बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, पशु-पक्षियों के प्रति प्रेम जताते हुए उनकी आकृति को रूप दिया। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान संयुक्त रूप से मीना कुशवाहा, हंसिका नामदेव, द्वितीय स्थान दिशा सोनी, कुमकुम, अनुष्का पटवा, आरजू खान, स्नेहा लोधी, कंचन लोधी, साहनी लोधी और तृतीय स्थान संजना, स्नेहा, सारिका पटवा, प्रतीक्षा पटवा और श्वेता ने संयुक्त रूप से प्राप्त किया। प्राचार्य संजय जैन, राजयोग शिक्षिका बीके गुड्डी भी मौजूद रहीं।

सम्मान समारोहः बीना सेवाकेंद्र पर जैविक खेती कर रहे नशामुक्त किसानों का सम्मान समारोह आयोजित किया गया। इसमें कृषि उद्यानिकी अधिकारी प्रवीण साहू, सिंधी पंचायत के अध्यक्ष मंसाराम सुंदरानी, बीके सरस्वती, मुन्नालाल साहू सहित अन्य भाई-बहन मौजूद रहे।

शासकीय हायर सेकंडरी स्कूल में आयोजित रंगोली प्रतियोगिता में की 50 छात्राओं ने भाग लिया। स्वर्णिम भारत की दिखी झलक।

सभी को अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी

- अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर अभियान का शुभारंभ
- स्वर्णिम भारत की झलक

कार्यक्रम में बालक-बालिकाओं ने देशभक्ति गीतों पर जोरदार प्रस्तुति दी।

शिव आमंत्रण, रांची (झारखंड)। ब्रह्माकुमारीज़ के चौधरी बगान हरमू रोड सेवाकेन्द्र पर आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर अभियान का शुभारंभ विधायक सीपी सिंह ने किया। उन्होंने कहा कि महात्मा गांधीजी के सत्य. अहिंसा व ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करके भारत स्वर्णिम बनेगा और वही सच्ची आजादी होगी। बागवानी शोध संस्थान के निदेशक प्रो. अरुण कुमार सिंह ने कहा कि सारी जिम्मेवारी सरकार के ऊपर छोड़ देने से, काम नहीं बनेगा, एक-एक व्यक्ति को अपनी नैतिक जिम्मेवारी के साथ कार्य करना पड़ेगा। इस दिशा में ब्रह्माकुमारी संस्थान द्वारा किए जा रहे कार्य सराहनीय हैं।

सेवाकेंद्र संचालिका बीके निर्मला बहन ने कहा कि भगवान का एक नाम धर्मराज भी है। इसका अर्थ है कि वे धर्म युक्त राज्य की स्थापना करने वाले हैं। परमात्म सत्ता, धर्म और राज्य इन दोनों सत्ताओं में सर्वोच्च हैं। धर्म, सत्ता और राज्य-सत्ता अपनी चरम श्रेष्ठ स्थिति में एक ही हैं। दोनों में कोई विरोध नहीं है। सर्वश्रेष्ठ धर्मात्मा वही है जो राजाई सामर्थ्य के साथ अपनी कर्मेन्द्रियों को पूर्ण नियंत्रण में रखता है और सर्वश्रेष्ठ राजा वही है जो धर्म (धारणा) का स्वरूप बनकर अपने हर कर्म में दिव्य गुणों की झलक दिखाता है।

रांची के पूर्व आईएमए सचिव डॉ. श्याम सिडाना ने कहा हमें परमपिता परमात्मा शिव ने इस सत्यता का स्पष्ट रूप से बोध कराया है कि वह सतयुग का सुखमय जमाना अब आ पहुंचा है। ईश्वरीय कार्य गुप्त रूप से हो रहा है। विधिक माप विज्ञान संस्थान के पूर्व निदेशक डॉ. अवध मणि पाठक, इंस्पेक्टर द्विवेदी कनक भूषण, एचईसी के पूर्व महाप्रबंधक हेमन्त गुप्ता ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

500 वर्गफीट में बनाई विशाल रंगोली

शिव आमंत्रण, रायपुर (छग)। ब्रह्माकुमारीज़ के विधानसभा मार्ग स्थित शान्ति सरोवर रिट्रीट सेंटर पर विशाल रंगोली सजाई गई है। क्षेत्रीय निदेशिका ब्रह्माकुमारी कमला दीदी ने बताया कि 25 फीट बाई 20 फीट (पांच सौ वर्गफीट) में रंगोली सजाई गई। इसमें आजादी की जंग में बलिदान देने वाले महापुरूषों को प्रदर्शित करते हुए देशभक्ति की भावना को उकेरा गया है। स्वर्णिम भारत की भी झलक दिखाई गई है। 80 किलो रंग से इसे तीन दिन व रात में बनाया गया। बीके हितेन्द्र व ब्रह्माकुमारी बहनों का योगदान रहा।

सभी अपना कर्त्तव्य निभाएं

शिव आमंत्रण, बहल (हरियाणा)। आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर अभियान के तहत ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र द्वारा 73वें गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में स्नेह मिलन कार्यक्रम आयोजित किया गया। क्षेत्रीय संचालिका बीके शकुंतला ने कहा कि बीते वर्षों में हमने अधिकारों को पाने की लड़ाई अधिक लड़ी है। जबकि अपने कर्तव्यों का निर्वहन करने की तरफ अपेक्षाकृत कम ध्यान गया है। अपने कर्तव्य को निभाने के लिए आगे आएंगे तभी भारत विश्व गुरु बन सकता है। बीके पूनम ने कहा कि भारत वह आध्यात्मिक देश है जिसने कभी भी किसी की शांति भंग नहीं की।

बीके विद्या सम्मानित

शिव आमंत्रण, अंबिकापुर (छग)। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के नव विश्व भवन चोपड़ापारा में 73वां गणतंत्र दिवस हर्षोल्लास से मनाया गया। इस दौरान ध्वजारोहण कर भारत के वीर शहीदों को दीपक प्रज्वलित कर तीन मिनट मौन में रहकर श्रद्धांजली अर्पित की। सरगुजा संभाग की संचालिका बीके विद्या दीदी ने कहा कि भारत ही एक ऐसी भूमि हैं जिसे पूरी दुनिया प्यार और श्रद्धा से मां कहकर पुकराती है, क्योंकि यह अपने आंचल में बिना जाति- पाति का भेद किए हर एक को छांव, ममता, प्यार देती है। जिला प्रशासन की ओर से आयोजित मुख्य कार्यक्रम में जिले के प्रभारी मंत्री शिवहरे डहरिया द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा समाज कल्याण में की जा रही उत्कृष्ट सेवाओं के लिए बीके विद्या दीदी के लिए प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया।

स्वर्णिम भारत | छतरपुर में अमृत महोत्सव अभियान की लांचिंग

संस्था की दिशा-दृष्टि पहले से ही तय है

शिव आमंत्रण, छतरपुर (मप्र)। किशोर सागर स्थित ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर थीम पर संस्थान के समाज सेवा प्रभाग द्वारा मानवता के संरक्षक कार्यक्रम आयोजित किया गया। गंगा विचार मंच के राष्ट्रीय संयोजक डॉ. भरत पाठक ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की दिशा और दृष्टि दोनों आजादी के पहले से संस्थान के संस्थापक दादा लेखराज जी के समय से ही तय है। जब दिशा और दृष्टि तय हो तो हमें केवल सहयोग करना है। भाजपा महिला मोर्चा की प्रदेश उपाध्यक्ष डॉ. नंदिता पाठक ने कहा कि जब से मैं इस संस्था के प्रांगण में आई हूं मुझे इनके काम करने के तरीके ने अभिभूत किया है। समाज सेवा प्रभाग की जोनल कोऑर्डिनेटर और सेवाकेंद्र प्रभारी बीके शैलजा भी संबोधित किया। बीके कल्पना ने राजयोग का अभ्यास कराया। संचालन बीके रीना ने किया।

नई राहें

बीके पुष्पेन्द्र
संयुक्त संपादक, शिव आमंत्रण

नए भारत की ध्वज वाहक 'नारी शक्ति'

'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते, रमंते तत्र देवता' अर्थात् जहां नारियों की पूजा होती है, वहां देवता निवास करते हैं। भारत मातृशक्ति की पूजा देवी के रूप में करता रहा है। नारी का सम्मान भारतीय सभ्यता, संस्कृति और परंपरा रही है। हमारी संस्कृति की विशालता, महानता और वैभवता को वृहद बनाने, उसे मूल्यों के धागे में पिरोकर नव पीढ़ी को संस्कारित करने में नारी की अतुलनीय भूमिका रही है। हमारी देव संस्कृति में देखें तो नौ देवियों का ही गायन शास्त्रों में मिलता है, न कि नौ देवताओं का। नारी, मां के रूप में ईश्वर की वह अद्वितीय कृति है जिसकी वंदना, आराधना और उपासना स्वयं देवगण ने भी की है। व्यक्तित्व और कृतित्व की दृष्टि से नारी का चरित्र पुरुषों की तुलना में श्रेष्ठ और बहुआयामी रहा है। जब हम ईश्वर की वंदना करते हैं तो गाते हैं तुम्हीं हो माता, तुम्हीं पिता हो...। नई सतयुगी सृष्टि की स्थापना और सृजनहार होने से ब्रह्मा को 'ब्रह्मा मां' भी कहा जाता है। किसी ने कहा है कि जो स्त्री का अपमान करता है, वो मां का अपमान करता है, जो मां का अपमान करता है, वो भगवान का अपमान करता है और जो भगवान का अपमान करता है, उसका पतन निश्चित है।

विश्व महिला दिवस

नारी जब शक्ति का रूप लेती है तो ब्रह्माकुमारीज़ जैसे संस्थान की संकल्पना साकार हो उठती है।

हर क्षेत्र में कीर्तिमान रच रहीं है नारी शक्तिः कोई भी राष्ट्र प्रगति के पथ पर तब तक आगे नहीं बढ़ सकता है, जब तक कि वहां की महिलाएं आगे नहीं बढ़ती हैं, विकास में सहयोगी नहीं बनती हैं। आज धरती से लेकर आकाश तक महिलाओं ने अपनी प्रतिभा, कौशल, शक्ति, नेतृत्व और अदम्य साहस का परिचय दिया है। खेलों से लेकर प्रशासन, राजनीति, शिक्षा, स्वास्थ्य और आध्यात्म के क्षेत्र में महिलाएं रोज नित नए कीर्तिमान रच रहीं हैं। समाज भी इस बदलाव को स्वीकार कर रहा है और बेटों की तरह बेटियों को भी शिक्षा-दीक्षा, लालन-पालन में समभाव और खुलकर जीने की आजादी दी जा रही है।

पुरातन काल से समाज को देती आ रहीं हैं दिशाः हमारे देश में गार्गी, मैत्रयी, अनुसुईया, अरुंधति, मदालशा जैसी महान नारियों ने समाज को जहां नई राह दिखाई है, वहीं कठिनाइयों से भरे मध्यकाल में पन्नाधाय, मीराबाई जैसी नारियों ने अपने कृतित्व से नारी की एक नई परिभाषा को गढ़ा है। चित्तूर की रानी चेनम्मा, मतंगनी हाजरा, रानी लक्ष्मीबाई, वीरांगना झलकारी बाई ने अपने अदम्य साहस, शक्ति, वीरता और शैर्य से लोहा मनवाया है। सामाजिक क्षेत्र में नजर डालें तो अहिल्याबाई होलकर, सावित्री फुले ने भारत की पहचान को नए तरीके से रेखांकित किया है। नारी जब प्रेम स्वरूप का रूप लेती है तो मदर टैरेसा जैसी महिला इस समाज को मिलती है।

महापुरुषों ने भी नारी के योगदान को सराहाः आध्यात्मिक क्रांति के प्रणेता स्वामी विवेकानंदजी ने कहा था कि कुछ सच्ची, ईमानदार और ऊर्जावान महिलाएं, जितना कोई एक सदी में कर सकता है, उसके मुकाबले एक वर्ष में कर सकती हैं। नारी ही परिवार और समाज का केंद्र बिंदु है। वहीं बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर का मानना था कि मैं किसी समुदाय की प्रगति उस समुदाय में महिलाओं द्वारा की गई प्रगति से मापता हूं। काल मार्क्स कहते का मानना था कि पुरुष अपना भाग्य नियंत्रित नहीं करते, उसके जीवन में मौजूद औरत अपने गुणों से उसके लिए भाग्य निर्माण करती है।

नव सृजन के कार्य में समर्पित ब्रह्माकुमारियांः नारी जब शक्ति का रूप लेती है तो ब्रह्माकुमारीज़ जैसे संस्थान की संकल्पना साकार हो उठती है। जिसकी मुखिया से लेकर तमाम पदों पर नारियां नेतृत्व कर रहीं हैं। जिन्होंने समाज को स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन का महान लक्ष्य दिया है। शक्ति स्वरूपा की गाथा को साकार करते हुए 47 हजार ब्रह्माकुमारी बहनें त्याग, सेवा, समर्पण, निष्ठा और आत्म विश्वास के साथ विश्व बंधुत्व के कार्य में जुटी हैं। इस महान लक्ष्य में वह परमात्मा की शिक्षाएं, वरदान और दिव्य प्रेरणा को आत्मसात करते हुए अपने पथ पर निरंतर बढ़ती जा रही हैं।

सुस्ती के भिन्न-भिन्न रूपों को चेक कर चैंज करना है!

उद्घाटन] भोपाल जोन में भी आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर अभियान का आगाज

स्वर्णिम भारत का सपना होगा साकार

- 20 बहनों को सौंपी 20 विभिन्न प्रभागों की कमान

» शिव आमंत्रण, भोपाल (मप्र)। आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर अभियान भारत की सभ्यता, संस्कृति को देश-दुनिया को बताने का अभियान है। हम सबको मिलकर भारत को स्वर्णिम बनाने के कार्य में संपूर्ण समर्पण के साथ सेवा में जुटना होगा।

उक्त विचार भोपाल जोन की निदेशिका राजयोगिनी बीके अवधेश ने व्यक्त किए। मौका था ब्रह्माकुमारीज़ के जोनल हैडक्वार्टर राजयोग भवन में गणतंत्र दिवस के पावन पर्व पर आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर अभियान के शुभारंभ का। इस दौरान स्वर्णिम भारत की थीम पर झांकी सजाई गई। इसमें देश के लिए शहीद हुए वीरों सुभाष चंद्र बोस, चंद्रशेखर आजाद, भगत सिंह, वीरांगना लक्ष्मीबाई, रानी पद्मावती, रानी अहिल्याबाई, झलकारीबाई, जनरल बिपिन रावत, स्वामी विवेकानंद आदि के स्वरूपों का प्रदर्शन किया गया है। साथ ही स्वर्णिम भारत की झलक दिखाते हुए राधा कृष्ण, भारत माता की झांकी सजाई गई। सबसे पहले तिरंगा फहराया गया। देशभक्ति की गीतों पर बालिकाओं ने प्रस्तुति दी। इस दौरान सभी को प्रतिज्ञा कराई गई कि हम सभी दृढ़ संकल्प लेते हैं कि परमात्मा ने हमारे अंदर जो आध्यात्मिक शक्ति का फाउंडेशन डाला है, उसका सदुपयोग करेंगे। एक दिन स्वर्णिम भारत और विश्व गुरु का सपना जरूर साकार होगा।

जोनल सेवाकेंद्र राजयोग भवन भोपाल में राज्य स्तरीय अभियान की लांचिंग की गई।

200 ब्रह्माकुमारी बहनों लिया भाग

02 दिन चला राज्य स्तरीय चिंतन शिविर

प्रदेशभर से पहुंचीं बहनें: दो दिन चले इस चिंतन शिविर में मध्यप्रदेश के विभिन्न सेवाकेन्द्रों से लगभग 200 ब्रह्माकुमारी बहनों ने भाग लिया। इस दौरान सभी ने अमृत महोत्सव के तहत अपने-अपने कार्यक्षेत्र, सेवाकेंद्रों पर कार्यक्रम आयोजित करने की रूपरेखा बनाई। 20 प्रभागों के कार्यक्रमों की 20 ब्रह्माकुमारी बहनों को जिम्मेदारी सौंपी गई।

ब्रह्मा बाबा के कर्म बने आदर्श

» शिव आमंत्रण, नवापारा/राजिम (छग)। ब्रह्माकुमारी संस्थान के संस्थापक पिताश्री ब्रह्मा बाबा की 53वीं पुण्यतिथि विश्व शांति दिवस के रूप में मनाई गई। बीके प्रिया ने कहा कि ब्रह्मा बाबा ने कर्तव्य किए वह सभी के लिए आदर्श बन गए । इंदौर से पधारे बीके नारायण ने कहा कि ब्रह्मा बाबा की लोक कल्याण की भावना हमारे लिए अनुकरणीय बन गई। पवित्रता की पराकाष्ठा, मधुरता, मानवता हमारे लिए आदर्श बन गई। व्याख्याता हेमंत साहू, विवेक शर्मा, सेवाकेंद्र संचालिका बीके पुष्पा सहित अतिथियों ने पुष्पांजलि अर्पित की।

ईश्वर का ध्यान ही जिंदगी है

» शिव आमंत्रण, भरतपुर (राजस्थान)। श्री हरिदत्त डिग्री कॉलेज के अंतर्गत राजस्थान सरकार के मुख्य सचिव आईएएस निरंजन आर्य के आगमन पर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा स्वागत किया गया। मुख्य सचिव आर्य ने कहा कि आध्यात्म के मार्ग पर चलकर ईश्वर का ध्यान करना ही जिंदगी है। ब्रह्माकुमारी बहनों को देखकर मुझे बहुत खुशी हो रही है। आयुक्त हिमांशु गुप्ता, कलेक्टर प्रसन्न कुमार, पुलिस महानिरीक्षक सुशील कुमार, बीके प्रवीणा, बीके गीता, बीके पावन, बीके कर्नल ओमवीर मौजूद रहे।

अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय शांतिवन में आन-बान-शान से लहराया तिरंगा

» शिव आमंत्रण, आबू रोड। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय आबू रोड शांतिवन में गणतंत्र दिवस पर आन-बान-शान से तिरंगा झंडा फहराया गया। ध्वजारोहण कर संस्थान के सचिव बीके निर्वैर, संयुक्त मुख्य प्रशासिका बीके मुन्नी बहन ने परेड की सलामी ली। बीके निर्वैर ने कहा कि बहुत ही हर्ष की बात है कि भारत तेजी से विश्व गुरु बनने की ओर बढ़ रहा है। आध्यात्मिकता और योग का लोहा दुनिया मान रही है।

सामाजिक सेवाओं पर मंत्री ने किया बीके रमेश का सम्मान

» शिव आमंत्रण, हिसार, हरियाणा। 26 जनवरी गणतंत्र पर हिसार महावीर स्टेडियम में ध्वजारोहण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें मुख्य अतिथि हरियाणा के सहकारिता मंत्री डॉ. बनवारी लाल ने हिसार सेवाकेंद्र संचालिका बीके रमेश कुमारी बहिन को उनके द्वारा कोरोना उन्मूलन अभियान में सक्रिय योगदान देने पर प्रशस्ति पत्र प्रदान कर समानित किया गया। इस मौके पर बीके अनिता, बीके डॉ. रामप्रकाश, डिप्टी कमिश्नर डॉ. प्रियंका सोनी, सीएमओ डॉ. रत्ना भारती सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

राष्ट्रीय युवा दिवस | ब्रह्माकुमारीज़ में दो लाख से अधिक युवा ब्रह्मचर्य व्रत को धारण कर विश्व परिवर्तन के कार्य में जुटे

स्प्रीचुअल इम्युनिटी से मेंटल व प्रोफेशनल इम्युनिटी होती है मजबूत: बीके मोहन

- राष्ट्रीय युवा दिवस पर कार्यक्रम आयोजित

» शिव आमंत्रण, आबू रोड। जब हम स्प्रीचुअल इम्युनिटी को शक्तिशाली बनाते हैं तो इससे हमारी मेंटल और प्रोफेशनल इम्युनिटी भी स्ट्रांग बनती है। आज के समय में युवाओं को स्प्रीचुअल इम्युनिटी को बढ़ाने के लिए प्रयास करना होगा।

उक्त उद्गार वैज्ञानिक एवं अभियंता प्रभाग के अध्यक्ष बीके मोहन सिंघल ने व्यक्त किए। मौका था स्वामी विवेकानंद की 159वीं जयंती पर आयोजित कार्यक्रम का। राजयोगा एजुकेशन एंड रिसर्च फाउंडेशन के युवा प्रभाग, ब्रह्माकुमारीज़ और ग्राम स्वराज मंच के संयुक्त तत्वावधान में मनमोहिनीवन के ग्लोबल ऑडिटोरियम में एकल विद्यालय के विद्यार्थियों और शिक्षक-शिक्षिकाओं के लिए कार्यक्रम आयोजित किया गया। भीनमाल से पधारीं युवा प्रभाग की वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके गीता बहन ने कहा कि स्वामी विवेकानंद जी को बचपन से ही मैं कौन हूं? कहां से आया हूं? आदि प्रश्नों की गुत्थी सुलझाने के लिए दिन-रात चिंतन में लगे रहते थे। जब वह पहली बार अपने गुरु रामकृष्ण परमहंस जी के आश्रम पहुंचे तो उन्होंने बाहर से आवाज लगाई। इस पर अंदर से गुरुजी ने पूछा कि कौन? इस पर स्वामीजी ने जवाब दिया कि मैं कौन हूं, इसी का रहस्य जानने के लिए आपके पास आया हूं गुरुवर। यह जबाव सुनकर गुरुजी ने कहा आओ, मुझे ऐसे ही शिष्य की तलाश थी।

स्वामी विवेकानंद जी ने कहा कि मुझे सौ बालब्रह्मचारी युवा मिल जाएं तो मैं दुनिया को बदल दूंगा। ब्रह्माकुमारीज़ ही एकमात्र ऐसा संस्थान है जहां दो लाख से अधिक युवा जीवन में ब्रह्मचर्य व्रत को धारण कर, संपूर्ण नशामुक्त और संयमित जीवनशैली अपनाते हुए विश्व शांति के कार्य में जुटे हुए हैं। बीके कृष्णा बहन ने राजयोग की अनुभूति कराई। ग्राम स्वराज मंच के भाग अध्यक्ष जगदीश रावल, पीआरओ बीके कोमल, राजेंद्र बाकलीवाल, भगाराम जी, प्रभुराम गरासिया, सच्चिदानंद झा, युवा प्रभाग के बीके हरीश ने भी विचार व्यक्त किए। संचालन मधुबन न्यूज की एंकर बीके शिवांगी और ग्राम स्वराज मंच के संभाग प्रमुख प्रभुराम लोटाणा ने किया। गांवों से आईं बालिकाओं ने राजस्थानी गीतों पर जोरदार प्रस्तुति दी। अतिथियों का राजस्थानी पगड़ी से स्वागत किया गया।

कार्यक्रम में मौजूद एकल विद्यालय के विद्यार्थी और शिक्षक-शिक्षिकाएं।

सूचना के लिए संपर्क करें

सामाजिक सेवाओं और आंतरिक सशक्तिकरण के प्रयास के साथ निकाला गया मासिक **शिव आमंत्रण समाचार पत्र** एक संपूर्ण अखबार है। इसमें आप सभी पाठकों का लगातार सहयोग मिल रहा है, यही हमारी ताकत है।

वार्षिक मूल्य 110 रुपए, **तीन वर्ष** 330
आजीवन 2500 रुपए

पत्र व्यवहार का पता

संपादक ब्र.कु. कोमल
ब्रह्माकुमारीज़ शिव आमंत्रण ऑफिस, शांतिवन, आबू रोड, जिला- सिरोही, राजस्थान, पिन कोड- 307510
मो 6377090960, 9414172596, 941338 4884, Email shivamantran@bkivv.org

Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2021-23, Licensed to Post without pre-payment No. RJ/WR/WPP/18/2021

Posted at Shantivan P.O. Dt. 17 to 20 of Each Month

■ प्रकाशक एवं मुद्रक: ब्र.कु. करुणा द्वारा प्रकाशित एवं डीबी कॉर्प लिमिटेड जयपुर से मुद्रित ■ संपादक: ब्र.कु. कोमल ■ संयुक्त संपादक: ब्र.कु. पुष्पेन्द्र ■ RNI No.: RJHIN/2013/53539